व्याकरण दर्पण 8

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

1 (क) भाषा के दो भेद हैं–मौखिक भाषा और लिखित भाषा।

1. **मौखिक भाषा–** भाषा का वह रूप जिसमें बोलकर समझाया जाता है और सुनकर समझा जाता है, मौखिक भाषा कहलाता है। जैसे–

   नीता ने अध्यापिका से प्रश्न पूछा।

2. **लिखित भाषा–** जब लिखकर या पढ़कर विचारों का आदान-प्रदान होता है तो वह भाषा-रूप लिखित भाषा कहलाता है। जैसे–

   प्रवीण निबंध लिखने लगा।

(ख) जिन चिह्नों का मौखिक ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए प्रयोग किया जाता है, उन्हें उस भाषा की लिपि कहते हैं।

भाषाएँ और उनकी लिपियाँ इस प्रकार हैं–

भाषा	**लिपि**
1. संस्कृत	देवनागरी
2. हिंदी	देवनागरी
3. पंजाबी	गुरमुखी
4. अरबी	फ़ारसी

(ग) भाषा विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होती है। एक भाषा के अंतर्गत उसकी उपभाषाएँ और उपभाषाओं के अंतर्गत उसकी बोलियाँ आ जाती हैं। जबकि भाषा का एक सीमित क्षेत्र में बोला जाने वाला स्थानीय रूप बोली कहलाता है।

(घ) भाषा के शुद्ध रूप को बोलने, लिखने तथा पढ़ने के नियमों का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं

(ङ) 1. हिंदी हमारी राजभाषा है।

2. इसकी 5 उपभाषाएँ एवं 18 बोलियाँ हैं।

3. यह एक वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी भाषा में वर्ण जिस प्रकार बोला जाता है, उसी प्रकार लिखा जाता है। अतः उच्चारण अशुद्ध होने पर वर्तनी भी अशुद्ध हो जाती है।

2 (क) बदलता (ख) अलग (ग) राजभाषा (घ) छोटा

3

	उपभाषाएँ	**बोलियाँ**
1.	पूर्वी हिंदी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
2.	पश्चिमी हिंदी	खड़ी बोली (कौरवी), हरियाणवी, ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी
3.	राजस्थानी हिंदी	मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मेवाड़ी
4.	पहाड़ी हिंदी	कुमाऊँनी, गढ़वाली
5.	बिहारी	मैथिली, मगही, भोजपुरी

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) **2** (ग) **3** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

- इन्हें बच्चे स्वयं करें।

  अध्यापक/अध्यापिका बच्चों की सहायता करें।

2. वर्ण विचार

1 (क) हिंदी वर्णमाला में मूलत: वर्णों की कुल संख्या 44 है।

वर्णों के दो भेद हैं– स्वर और व्यंजन।

(ख) ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ, ऋ) के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगने के कारण ह्रस्व स्वर कहा गया है। और दीर्घ स्वरों (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ औ) के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दोगुना समय लगता है। इसलिए इन्हें दीर्घ स्वर कहा गया है।

(ग) व्यंजनों के भेद निम्न आधार पर किए जाते हैं–

1. उच्चारण स्थान के आधार पर
2. प्रयत्न के आधार पर
3. श्वास की मात्रा के आधार पर
4. स्वरतंत्रियों के कंपन के आधार पर

(घ) **व्यंजन संयोग –** स्वर रहित व्यंजन को व्यंजन से जोड़ने को व्यंजन संयोग कहते हैं। व्यंजन संयोग करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए –

- ❖ खड़ी पाई वाले व्यंजनों में से खड़ी पाई को हटा दिया जाता है;
  जैसे – ख् को ख, च् को च
- ❖ जिन व्यंजनों के बीच में खड़ी पाई हो, उनमें पीछे का मुड़ा भाग हटा दिया जाता है; जैसे – क् को क (चक्की) फ् को फ (गिरफ़्तार)

❖ बिना पाई वाले व्यंजनों के नीचे हलंत लगा दिया जाता है; जैसे –

ट् = मट्ठी द् = द्वार ह् = चिह्न

❖ 'र' व्यंजन आने पर स्वर रहित र को अगले व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। इसे रेफ़ कहते हैं; जैसे – कर्म, धर्म

स्वर सहित र अपने पहले व्यंजन के पैर में लगता है। इसे पदेन कहते हैं; जैसे – प्रदीप, क्रम

ट्, ड् के नीचे 'र' (़) के रूप में लगता है; जैसे – राष्ट्र, ड्रामा।

(ङ) वर्तनी वर्णों एवं शब्दों के लिखने की विधि है। वर्तनी भाषा के उच्चारित रूप के अनुसार चलती है। हिंदी भाषा में वर्ण जिस प्रकार बोला जाता (उच्चारित) है, उसी प्रकार लिखा जाता है। अत: उच्चारण अशुद्ध होने पर वर्तनी भी अशुद्ध हो जाती है। भारत में अनेक भाषाओं और हिंदी की स्थानीय बोलियों के कारण हिंदी वर्णों के उच्चारण में अंतर आ जाता है, जिससे वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ आ जाती हैं। उदाहरण– मात्रा, व्यंजन, ऋ, र, अनुस्वार, अनुनासिक, संयुक्ताक्षर संबंधी अशुद्धियाँ।

2 पृष्ठभूमि – प् + ऋ + ष् + ठ् + अ + भ् + ऊ + म् + इ

असंवैधानिक – अ + स् + अं + व् + ऐ + ध् + आ + न् + इ + क् + अ

कृतिका – क् + ऋ + त् + इ + क् + आ

3 कक्ष, पत्र, शिक्षा, ज्ञान

4 सेठ, पुराना, रात्रि, दरवाज़े, ध्वनि, सेठ, नींद, खुल, आँखें, दानव, आकार, विशाल, मनुष्य, सेठ, भूत, पहले, किराया, बात, सेठ, भूत, ईश्वर, दरबार, तुम, ईश्वर, मेरी, आयु, पूछकर, समझ, भूत

5 हँसी आँख दाँत अँगारे चाँद

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (ख) **3** (ग) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चे नए-नए शब्द बनाना सीखेंगे।

3. शब्द विचार

1 (क) शब्द वर्णों का सार्थक एवं अपेक्षित अर्थ देने वाला समूह है। जबकि वर्ण मुख से उच्चारित ध्वनियों के निर्धारित चिह्न होते हैं। यह भाषा की वह लघुतम इकाई है, जिसके और टुकड़े नहीं होते।

(ख) स्रोत के आधार पर शब्दों के भेद हैं–

1. **तत्सम शब्द–** वे शब्द जो संस्कृत से हिंदी में आकर उसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे– मयूर, घृत, दंत, पंच आदि।

2. **तद्भव शब्द–** वे शब्द जो संस्कृत शब्दों का ही बदला अथवा बिगड़ा हुआ रूप हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे– मोर, घी, दाँत, पाँच आदि।
3. **देशी या देशज़ शब्द–** जिन शब्दों की उत्पत्ति क्षेत्रीय बोलियों और भाषाओं से हुई है उन्हें देशज या देशी शब्द कहा जाता है। जैसे–झुग्गी, झोला, लोटा, पगड़ी, टाँग, जूता, खिचड़ी, भूखा आदि।
4. **विदेशी शब्द–** वे शब्द जिनका मूल भारतीय भाषाएँ न होकर, दूसरे देश की भाषाएँ हैं; ऐसे शब्द हिंदी में विदेशी शब्द कहे जाते हैं– कार, मोटर, अमीर, गरीब, कालीन, पिस्तौल, लीची, चाय, पुलिस, कार्टून आदि।

(ग) वे शब्द जो दो या दो से अधिक मूल शब्दों के योग से बने हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे– स्नानघर, बैलगाड़ी।

वे शब्द जो बनते तो दो स्वतंत्र शब्दों से हैं, लेकिन आगे चलकर किसी के लिए रूढ़ हो जाते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे– हिमालय, दशानन, नीलकंठ ऐसे ही शब्द हैं जो क्रमशः पर्वत, रावण तथा शिव के लिए विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

(घ) अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद हैं–

1. **एकार्थी शब्द–** सामान्यतः जो शब्द एक ही अर्थ में जाने जाते हों उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं। घर, तालाब, कुर्सी, मेज़, कमरा इत्यादि।
2. **अनेकार्थी शब्द–** एक से अधिक अर्थ वाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। जैसे–अंबर – आकाश/कपड़ा, जल – पानी/जलना, कर –हाथ/टैक्स
3. **श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द–** वे शब्द जो सुनने में एक जैसे लगते हैं, परंतु उनका अर्थ अलग-अलग होता है। उनकी वर्तनी में भी सूक्ष्म अंतर होता है। जैसे–गृह – घर; ग्रह – नक्षत्र
4. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द–** ऐसे शब्द जो वाक्यांशों या अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। जैसे–उपकार मानने वाला – कृतज्ञ।
5. **पर्यायवाची/समानार्थी शब्द–** ऐसे शब्द जिनके समान अर्थ देने वाले अन्य शब्द भी हों जैसे–जल - पानी, अंबु, नीर, वारि।
6. **विपरीतार्थक/विलोम शब्द–** एक-दूसरे के विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं जैसे–ऊपर – नीचे, दिन – रात।

(ङ) तत्सम – 1. आम्र 2. अस्थि 3. दुग्ध 4. कपोत 5. नृत्य
तद्भव – 1. आम 2. हड्डी 3. दूध 4. कबूतर 5. नाच

2 कागज़ – फ़ारसी, साबुन – पुर्तगाली, आइना – तुर्की
गमला – पुर्तगाली, फ़कीर – अरबी, ताश – तुर्की
मोटर – अंग्रेज़ी, दावा – फ़ारसी, मालिक – अरबी

3 (क) एकार्थी (ख) तद्भव (ग) अविकारी (घ) हड्डी
(ङ) यौगिक शब्द (च) तुर्की

4 चाय-वाय, कमल-वमल, प्राण-व्राण
पानी-वानी, चमन-वमन, धन-शन

5 **रूढ़** – पानी, सेब, बर्फ
यौगिक – विद्यालय, स्नानघर, पुस्तकालय
योगरूढ़ – हिमालय, पंकज, जलज

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (घ) **3** (ग) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

4. संज्ञा

1 (क) जो शब्द किसी वस्तु, प्राणी, स्थान अथवा भाव की पहचान कराते हैं, वे उनका नाम कहलाते हैं। नाम को संज्ञा कहते हैं।

दूसरे शब्दों में, किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद– व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञा।

(ख) समुदायवाचक संज्ञा किसी समूह का बोध कराती है; जैसे–सेना ने देश की रक्षा की। कक्षा में बच्चे पढ़ रहे हैं।

द्रव्यवाचक ठोस या तरल पदार्थ के रूप में होती है। इन्हें नापा या तौला जा सकता है; जैसे– सोना, चाँदी, लोहा, पीतल, मिट्टी इत्यादि।

द्रव्यवाचक संज्ञा के अंतर्गत आने वाली वस्तुओं की गिनती नहीं हो सकती। अत: ये प्राय: एकवचन में ही रहती हैं। इसी प्रकार, समुदायवाचक संज्ञा शब्दों में सजातीय वस्तुओं के समूह एकवचन में ही रहते हैं।

(ग) महात्मा जी जैसा हर कोई नहीं बन सकता। (गांधी जी के लिए)

नेताजी वीर एवं देशभक्त थे। (सुभाष चंद्र बोस के लिए)

गांधी जी, नेताजी शब्द वैसे तो जातिवाचक संज्ञाएँ हैं, लेकिन विशिष्ट व्यक्तियों के साथ घनिष्ठता से जुड़ने के कारण ये शब्द यहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा का स्थान पा गए हैं।

(घ) भाववाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों से बनती है। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्राय: पन, त्व, ता

आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे– मित्र – मित्रता; भ्रातृ – भ्रातृत्व; पराया – परायापन।

(ङ) विशेषण शब्द बहुवचन में प्रयोग होने पर जातिवाचक संज्ञा का रूप ले लेते हैं। जैसे–अच्छों की संगति में रहो। दुर्बलों की मदद करना हमारा कर्तव्य है।

2

प्यास	प्यासा	अपनापन	अपना	चढ़ाई	चढ़ना
कुरूपता	कुरूप	आकर्षण	आकर्षक	पढ़ाई	पढ़ना
बचपन	बच्चा	बचाव	बचना	खेल	खेलना

3

चुनना	चुनाव	रोना	रुलाई	भोला	भोलापन
पुकारना	पुकार	उठना	उठान	हँसना	हँसी
खट्टा	खटाई	निज	निजत्व	उड़ना	उड़ान
गिरना	गिरावट	मीठा	मिठास	मूर्ख	मूर्खता

4 आपकी <u>ज़ेब</u> में <u>रुपये</u> हैं। – जातिवाचक, व्यक्तिवाचक

<u>फूलों</u> में <u>महक</u> है। – जातिवाचक, भाववाचक

<u>बादल</u> <u>आकाश</u> में मँड़रा रहे हैं। – जातिवाचक, जातिवाचक

<u>यमुना</u> <u>किनारे</u> <u>वृक्ष</u> खड़े हैं। – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, जातिवाचक

5 बुढ़ापा – बूढ़ों की सेवा करनी चाहिए।

चोरी – चोरों को पकड़ना कठिन कार्य है।

मित्रता – मित्रों की पहचान विपत्ति के समय होती है।

राष्ट्रीयता – सभी राष्ट्रों को एक मंच पर आना होगा।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (क) **3** (ग) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

व्यक्तिवाचक – कान, कानपुर, कमला, तमिल

जातिवाचक – बिस्तर, बस, पशु, नथ, लड़का, रज़ाई, ईश्वर

भाववाचक – सज़ा, लालच, थकान, बचपन

क	त	बि	स्त	र
म	मि	ब	स	ज़ा
ला	ल	च	क्ष	ई
न	ड़	प	शु	श्व
थ	का	न	पु	र

5. लिंग

1 (क) हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद हैं– पुल्लिग और स्त्रीलिंग।

पुल्लिंग– पुरुष जाति का बोध कराने वाले संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द पुल्लिग कहलाते हैं। जैसे– पंखा तेज़ चल रहा है।

स्त्रीलिंग– स्त्री जाति का बोध कराने वाले संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं। जैसे– पेड़ पर बैठी चिड़िया उड़ गई।

(ख) पुल्लिग की पहचान– देशों के नाम, अनाजों के नाम, वृक्षों के नाम, ग्रहों के नाम, पर्वतों एवं सागरों के नाम, पदार्थों के नाम, समय के नाम, वर्णमाला के अक्षर, दिनों एवं महीनों के नाम, समूहवाची शब्द, शरीर के अंगों के नाम, धातुओं के नाम, प्राणियों के नाम इत्यादि पुल्लिग होते हैं। अपवाद रूप में इनमें भी स्त्रीलिंग शब्द हैं। (पृष्ठ 32-33 देखें।)

(ग) नित्य पुल्लिग शब्द– कीड़ा, बिच्छू, खरगोश, कौआ, भेड़िया।
नित्य स्त्रीलिंग शब्द– गिलहरी, तितली, दीमक, मक्खी, मैना।

(घ) सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया पर भी लिंग परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। यदि संज्ञा पुल्लिग है तो सर्वनाम, विशेषण, एवं क्रिया पुल्लिग होंगी और संज्ञा के स्त्रीलिंग होने पर सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया भी स्त्रीलिंग हो जाएँगी।

(ङ) नित्य स्त्रीलिंग शब्दों के पहले नर जोड़कर उनके पुल्लिग बनाए जाते हैं।

2 पुल्लिग– नायक, नर्तक, तालाब, दही, पंखा, प्रकाश, स्वप्न, विश्वास, प्राणी, कवि, गायक, भवदीय, व्यक्ति

स्त्रीलिंग– कुरसी, नहर, पुस्तक, रोशनी, अस्वस्थता, संवेदना, कृतज्ञता, विदुषी, अनुजा, नृत्यांगना, प्रशंसा

3

शिष्य	शिष्या	पाठक	पाठिका	बैल	गाय
इंद्राणी	इंद्र	बुआ	फूफा	स्वामी	स्वामिनी
क्षत्रिय	क्षत्राणी	भील	भीलनी	दाता	दात्री
सेविका	सेवक	भाग्यशालिनी	भाग्यशाली	चील	नर चील

4 (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

5 (क) क्षत्रिय अपने शत्रु से नहीं घबराता।

(ख) रीमा बहुत विदुषी है।

(ग) तुमने कितनी मिठाई खरीदी।

(घ) हाथी बहुत बलवान है।

(ङ) घड़ा हाथ से छूट गया।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (ख) **3** (क) **4** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

1 तपस्वी **2** वीरांगना **3** नागिन **4** नर्मदा **5** दास **6** सगा
7 गायक **8** कटोरा **9** रानी **10** नीला

6. वचन

1 (क) संज्ञा या सर्वनाम के उस रूप को वचन कहते हैं, जो उसके एक अथवा एक से अधिक होने का बोध कराता है।

(ख) हिंदी में वचन के दो भेद हैं– एकवचन और बहुवचन

एकवचन– एक वस्तु अथवा प्राणी का बोध कराने वाले संज्ञा/सर्वनाम शब्द एकवचन की श्रेणी में आते हैं। जैसे– खिला फूल सुंदर लग रहा है।

बहुवचन– एक से अधिक प्राणियों एवं वस्तुओं का बोध कराने वाले संज्ञा/सर्वनाम शब्द बहुवचन कहलाते हैं। जैसे– संतरे खट्टे निकले।

(ग) हाँ, वचन के बदलने का प्रभाव संज्ञा अथवा क्रिया पर पड़ता है।

(घ) ऊकारांत शब्दों के बहुवचन बनाते समय 'ऊ' की मात्रा (ू) 'उ' की मात्रा (ु) में बदल जाती है तथा स्त्रीलिंग शब्दों में 'एँ' जोड़ते हैं।

2 (क) बंदर केले खा रहे हैं।

(ख) चुटकुला सुनाकर हमने सबको हँसाया।

(ग) रोगी दवाइयाँ पीकर सो गए।

(घ) नावें डूबने से दस लोग मारे गए।

(ङ) ये दवाइयाँ बहुत महँगी हैं।

3 (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

4

लहर	लहरें	वस्तुएँ	वस्तु	विधि	विधियाँ
गुरु	गुरुजन	पतंग	पतंगें	गुड़ियाँ	गुड़िया
बस्ता	बस्ते	खिड़की	खिड़कियाँ	बस	बसें

5

वह जा रहा है।	एकवचन
आप लोग क्या कर रहे हैं?	बहुवचन
ये गाएँगे।	बहुवचन
उसने खीर पकाई।	एकवचन

6 (क) हमने समाचार पढ़ लिए हैं।

(ख) मैंने हाथ फैला दिए हैं।

(ग) उसने हस्ताक्षर कर दिए।

(घ) वह अनेक बार पकड़ा गया है।

(ङ) इस संसार में भले लोग भी हैं।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (ग) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

हरेक मानव की कुछ इच्छा और आवश्यकता होती है। वे सुख शांति की कामनाएँ करते हैं, किंतु कल्पना से ही सभी कार्यों की सिद्धि नहीं हो पाती। इनके लिए श्रम करना पड़ता है। जैसे सोए हुए शेरों के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नहीं करते, वैसे ही केवल मन की इच्छा से काम सिद्ध नहीं होते। उसके लिए परिश्रम करना पड़ता है। परिश्रम ही जीवन की सफलताओं का रहस्य है। कहा जाता है कि ईश्वर भी उसी की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करता है। सफलता की राह के प्रथम चरण में ही एक कदम ठिठक जाता है। शंका, भय, निराशा का एक रोड़ा अनजाने में उसे असफल कर देता है। आँख तो सभी के पास होती है पर यथार्थ को समझने की दृष्टि भी सबके पास हो, ज़रूरी नहीं। जहाँ संशय होंगे, विनाश को स्वत: आमंत्रण मिल जाएगा। सफलताओं और असफलताओं, आशाओं और निराशाओं का स्रोत विचार ही है। विचार जगाते हैं तो व्यक्ति जाग जाते हैं। विश्वासों, आशाओं के पथों से गुज़रकर सफलता तक जाता है जबकि संशय, निराशा के पथ से गुज़रकर असफलता को पक्का कर देते हैं।

7. कारक

1 (क)

क्रम	कारक के भेद	परसर्ग/चिह्न
1.	कर्ता कारक	0, ने
2.	कर्म कारक	0, को
3.	करण कारक	से/के द्वारा, के साथ
4.	संप्रदान	के लिए/को/के वास्ते
5.	अपादान कारक	से अलग/से
6.	संबंध कारक	का/के/की/रा/रे/री
7.	अधिकरण कारक	में/पर
8.	संबोधन कारक	हे/अरे/ऐ

(ख) करण कारक में शब्दों से क्रिया को करने का साधन पता चलता है। इसमें से, के द्वारा, के साथ जैसे परसर्ग होते हैं जबकि अपादान कारक में शब्दों में अलगाव, तुलना करने, डरने, सीखना, लजाने, घृणा आदि का भाव होता है। इसका परसर्ग 'से' है।

(ग) वाक्य में क्रिया के साथ 'किसके लिए', 'किसको', 'किसके द्वारा' प्रश्न का उत्तर मिले, तो वहाँ संप्रदान कारक होता है।

(घ) कर्ता कारक– रजनी कपड़े धो रही है।
गजेंद्र तबला बजाने लगा।

कर्म कारक– पुलिस ने चोर पकड़ लिया।

रुको, पेड़ मत काटो।

अधिकरण कारक– हमने गली-गली घूमकर सामान बेचा।

(ङ) कर्म कारक और संप्रदान कारक दोनों का विभक्ति चिह्न 'को' है। इससे अनेक बार भ्रम उत्पन्न हो जाता है। कर्म कारक में 'को' कर्म के लिए आता है जबकि संप्रदान कारक में 'को' का प्रयोग कुछ देने के भाव में होता है। जैसे–

कर्म कारक– पिता जी ने गौरव को बुलाया।

संप्रदान कारक– पिता जी ने गौरव को पुस्तक दी।

(च) संबोधन कारक का प्रयोग संज्ञा को बुलाने, पुकारने या संबोधित करने के लिए होता है। संबोधन कारक का कोई विभक्ति चिह्न नहीं होता, लेकिन संज्ञा के साथ अरे, हे, अजी आदि अव्यय लगाकर प्रकट किया जाता है।

2 (क) अपनी इच्छा को मत दबाओ। (ख) बच्चे के लिए दूध लाइए।

(ग) पानी में चीनी घोल लो। (घ) पेड़ से पत्ता गिर पड़ा।

(ङ) उसने मेरी पुस्तक चुरा ली।

3 (क) नानी रीतु के लिए गुड़िया लाई। ('से' के स्थान पर 'के लिए' आएगा।)

(ख) चूहा बिल में घुस गया। (ग) यह किताब मेरी है।

(घ) सोनू छत से गिर गया। (ङ) राजू ने दादा जी को अखबार दिया।

4 (क) अपादान (ख) करण (ग) अपादान

(घ) कर्म

5 (क) मोहित ने यात्रा की।

(ख) घर में सामान आ गया है।

(ग) सृष्टि को सुंदर बनाया गया है।

(घ) धन से बहुत सारे काम बनते हैं।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (ग) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

शब्द	कारक-भेद	शब्द	कारक-भेद
भारत के	संबंध कारक	स्वतंत्रता-संग्राम में	अधिकरण कारक
भारतमाता को	कर्म कारक	स्वतंत्रता दिलाने के लिए	संप्रदान कारक
रानी गैड्यालू ने	कर्ता कारक	सन् 1932 में	अधिकरण कारक
अंग्रेज़ों के	संबंध कारक	युद्ध का	संबंध कारक

उनकी उम्र	संबंध कारक	जेल में	अधिकरण कारक
विषय में	अधिकरण कारक	पंडित जवाहरलाल नेहरू ने	कर्ता कारक
लड़की ने	कर्ता कारक	देशभक्ति के	संबंध कारक
साम्राज्य से	अपादान कारक	यातना और घुटन का	संबंध कारक
अंधेरी कोठरी में	अधिकरण कारक	पंडित नेहरू ने	कर्ता कारक
सन् 1937 में	अधिकरण कारक	जेल में	अधिकरण कारक
सरकार से	अपादान कारक	अंग्रेज़ों के	संबंध कारक
कानों पर	अधिकरण कारक		

8. सर्वनाम

1 (क) 'सर्वनाम' यानी सबका नाम। संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– मैं कल खेलने जाऊँगा। यहाँ 'मैं' शब्द सर्वनाम है।

(ख) सर्वनाम से भाषा का सौंदर्य बना रहता है। इससे भाषा में संक्षिप्तता आती है तथा भाषा प्रभावशाली बन जाती है। संज्ञा स्त्रीलिंग हो या पुल्लिंग सर्वनाम का रूप नहीं बदलता।

(ग) उत्तम पुरुषवाचक में सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाले के लिए होता है। जैसे– मैं, हम, मुझे।

निजवाचक सर्वनाम में निजता पर बल देने वाले सर्वनामों का प्रयोग होता है। जैसे– स्वयं, आप, अपने-आप निजवाचक सर्वनाम हैं।

(घ) अनिश्चयवाचक सर्वनाम शब्द किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। जैसे– कोई, कुछ, किसी।

निश्चयवाचक सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान की ओर संकेत करते हैं। जैसे– यह, वह, वे।

(ङ) किसी अन्य उपवाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध बताने के लिए प्रयोग होने वाले सर्वनाम शब्दों को संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जिसने-उसे, जो-वही, जिसका-उसे आदि।

2 (क) <u>कोई</u> तो सामने आएगा। (अनिश्चयवाचक)

(ख) ईश्वर <u>तू</u> ही <u>मेरा</u> आसरा है। (पुरुषवाचक)

(ग) अधिकारी ने <u>स्वयं</u> जाँच की। (निजवाचक)

(घ) <u>कुछ</u> तो बताओ। (अनिश्चयवाचक)

(ङ) अमित ने कहा, "भूख लगी है, <u>कुछ</u> खिलाओ।" (अनिश्चयवाचक)

(च) तुम्हारी घड़ी <u>यह</u> नहीं है। (निश्चयवाचक)

(छ) वहाँ <u>कौन</u> है, अंदर आ जाओ। (प्रश्नवाचक)

(ज) आप <u>क्या</u> खाएँगे? (प्रश्नवाचक)

(झ) वह थैला दो, जिसमें सामान था। (संबंधवाचक)

(ञ) मेरा एक भाई है, जो विदेश में है। (संबंधवाचक)

3 (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗

4 (क) उसे (ख) तुमने (ग) उसके, तुम्हें (घ) आप

5 (क) वह किसका स्कूटर है?

(ख) कौन-सी मेरी पतंग है?

(ग) आप कल खाने पर आइए।

(घ) माँ, घर आए अतिथि कौन थे?

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (ख) **3** (ग) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

घर लौट रहा था दफ़्तर से **कौन** बेहद थका हुआ,
मन भरा हुआ था **उसका** कुछ, ज्यों फल पका हुआ।
देख रहा था शाम की दुनिया, खूबसूरत हरी-भरी,
लोगों के चेहरों पर भी सुंदर संध्या थी उतरी।
तभी लगा **कुछ** जैसे कहीं **कोई** बजा हो सुंदर साज,
याद आ गई **उसे अपनी** माँ की मीठी आवाज़।
घूम रहा था मैं **वह नन्ही बिटिया** के साथ,
थामे हुए हाथ में अपने **वह** छोटा-सा हाथ।
तभी अचानक **कोई** हँसी ज़ोर से, ज्यों गूँजा संगीत,
लगा, स्मृति से मेरी भी झरा है **कहीं** जल-गीत।
वही धुन थी, वही स्वर था **किसी का**, वही था अंदाज,
कानों में बज रही थी **उसकी** माँ की मीठी आवाज़।

9. विशेषण

1 (क) संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

(ख) जो शब्द विशेषण की भी विशेषता बताए, ऐसे शब्दों को प्रविशेषण कहा जाता है।

(ग) विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं – मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था। (पृष्ठ संख्या 64-65 देखें।)

(घ) विशेषण जिनकी विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

(ङ) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द सर्वनाम होगा जबकि संज्ञा के साथ प्रयुक्त होने वाला सर्वनाम शब्द सार्वनामिक विशेषण होगा।

(च) 1. आकारांत विशेषण पुल्लिग विशेष्य के एकवचन रूप के साथ प्रयुक्त होता है। भोला लड़का लंबा पेड़

2. स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ आकारांत विशेषण लगाने पर विशेषण ईकारांत हो जाता है। यह एकवचन और बहुवचन दोनों में होता है।

भोली लड़की भोली लड़कियाँ

2 उसने तीन शाल खरीदे। — संख्यावाचक

वह दो मीटर कपड़ा ले आई। — परिमाणवाचक

उसे कुछ दूध चाहिए। — परिमाणवाचक

इतने सारे फलों का क्या करोगे? — संख्यावाचक

3 (क) तुमने कितनी सुंदर तस्वीर बनाई!

(ख) तुम्हारी पसंद बहुत अच्छी है।

(ग) मैंने सबसे ऊपरी मंज़िल खरीदी।

(घ) अधिक अच्छा उपहार लेकर आओ।

4. रतन अपनी सुंदर घड़ी बेच आया। — गुणवाचक

थोड़े से पानी से क्या होगा? — अनिश्चित परिमाणवाचक

जो किया है वही भुगतोगे। — कोई नहीं

डेढ़ दिन का काम रह गया। — निश्चित संख्यावाचक

सारा तेल गिर गया, अब क्या करें? — अनिश्चित परिमाणवाचक

उदास बालक रो पड़ा। — गुणवाचक

5

दया	दयावान	भूख	भूखा	नगर	नागरिक
काँटा	कँटीला	कौन	कैसा	टिकना	टिकाऊ
लड़ना	लड़ाकू	बाहर	बाहरी	बुद्धि	बुद्धिमान

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (ग) **3** (क) **4** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

विशेषण	शब्द	विशेषण	शब्द
भव्य	महल	संकरी	गली
खिली	कलियाँ	महा	नगर
खट्टी	इमली	कीमती	कंगन
स्वादिष्ट	हलवा	लखनवी	नवाब
शैतान	लड़का	सच्ची	गवाही
पका	कटहल	गर्म	रजाइयाँ

न	ग	र	ही	म	ट
वा	वा	जा	कं	ग	न
ब	ही	इ	म	ली	क
क	लि	याँ	ह	ल	वा
क	ट	ह	ल	ड़	का

10. क्रिया

1 (क) क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

(ख) अकर्मक क्रिया में कर्म नहीं होता और न ही उसकी अपेक्षा होती है। और क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है। जैसे–नर्तकी नाच रही है।

सकर्मक क्रिया में क्रिया का फल कर्ता पर नहीं कर्म पर पड़ता है। जैसे– सोनू घड़ा भरकर लाओ।

(ग) द्विकर्मक क्रिया में क्रिया की पूर्णता के लिए दो कर्म अवश्य होते हैं, क्योंकि एक कर्म न होने पर वाक्य पूर्ण नहीं होता। जैसे– तुम उसे रुपये लौटा दो। इसमें 'उसे' और 'रुपये' दोनों कर्म हैं। यदि एक भी हटा दें, तो वाक्य पूरा नहीं होगा।

(घ) जहाँ कर्ता क्रिया को स्वयं नहीं करता बल्कि दूसरे को करने के लिए प्रेरित करता है। उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे– ललित ने बच्चे को सुलाया।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया– जब कर्ता क्रिया से सीधे तौर पर जुड़ा हो तो उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे– बहन भाई को राखी बाँधती है। यहाँ कर्ता (बहन) सीधा क्रिया से जुड़ा है।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया– जब कर्ता खुद क्रिया न करके दूसरे को कार्य (क्रिया) करने के लिए प्रेरित करता है, तो क्रिया द्वितीय प्रेरणार्थक कहलाती है। जैसे– प्राची लड़के से खाना मँगवाती है। यहाँ कर्ता (प्राची) ने स्वयं कार्य नहीं किया बल्कि दूसरे को करने के लिए कहा।

(ङ) संयुक्त क्रिया में एक से अधिक क्रिया पद होते हैं। ये क्रियाएँ मिलकर एक ही क्रिया को पूर्ण करती हैं। जैसे–परेश जूस लेने गया था। इस वाक्य में 'लेने गया था' संयुक्त क्रिया है।

जो क्रिया मुख्य क्रिया से पहले संपन्न हो जाती है, वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे–व्यक्ति ने भागकर बस पकड़ी। इसमें 'भागकर' पूर्वकालिक क्रिया है।

2

राधिका <u>गई</u>।	अकर्मक
हम फिर <u>मिलेंगे</u>।	अकर्मक
राणाप्रताप वीरता से <u>लड़े</u>।	अकर्मक
साइकिल की घंटी <u>बजी</u>।	सकर्मक
मैंने सुरेश को पत्र <u>लिखा</u>।	सकर्मक
अब <u>चलें</u>।	अकर्मक
देर रात में सियार <u>रोने लगे</u>।	अकर्मक
वह <u>हँसते-हँसते रोने लगा</u>।	अकर्मक

3

	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक		प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
रोना	रुलाना	रुलवाना	बोलना	बुलाना	बुलवाना
लड़ना	लड़ाना	लड़वाना	ठहरना	ठहराना	ठहरवाना
नाचना	नचाना	नचवाना	चलना	चलाना	चलवाना
बैठना	बैठाना	बैठवाना	जगना	जगाना	जगवाना

4 (क) सभी मिलकर गड्ढ़ा खोद रहे थे।
(ख) अकाल में पशु-पक्षी भी प्यासे मरते हैं।
(ग) शेखचिल्ली की सब हँसी उड़ाते हैं।
(घ) मैंने भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया था।
(ङ) रोगी बिस्तर से उठ खड़ा हुआ।
(च) वह दो घंटे तक दौड़ता रहा।

5

सोना	वह सोकर उठेगा, तब पढ़ेगा।
बचना	गलत कामों से बचकर रहना चाहिए।
डरना	रोहन डरकर भाग गया।
बहना	सारा कूड़ा बहकर नाली में चला गया।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (घ) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

11. काल

1 (क) क्रिया के होने के समय को काल कहते हैं।
(ख) भूतकाल के भेद–

1. **सामान्य भूतकाल–** मेहमान चले गए।
2. **आसन्न भूतकाल–** नवीन कपड़े धो चुका है।
3. **पूर्ण भूतकाल–** वृद्ध बेहोश हो चुका था।
4. **अपूर्ण भूतकाल–** चूड़ीवाला चूड़ियाँ बेच रहा था।
5. **संदिग्ध भूतकाल–** बाज़ार बंद हो गया होगा।
6. **हेतुहेतुमद् भूतकाल–** आप आते, तो हम साथ चलते।

(पृष्ठ संख्या 79-80 देखें।)

(ग) अपूर्ण वर्तमान में क्रिया आरंभ तो होती है लेकिन पूर्ण नहीं होती। उसके जारी रहने की सूचना होती है। इसमें वाक्य के अंत में 'रहा है', 'रही है', 'रहे हैं' आता है।

(घ) इस काल में लगता है कि क्रिया अभी-अभी संपन्न हुई है, तभी इस क्रिया के काल को आसन्न भूतकाल कहते हैं। ये क्रियाएँ शुरू भी भूतकाल में होती हैं और संपन्न भी।

(ङ) संदिग्ध भविष्यत् काल में क्रिया के आने वाले समय में होने की संभावना होती है लेकिन निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जाता।

संदिग्ध वर्तमान काल में क्रिया के होने या न होने के विषय में संदेह रहता है। इसमें वाक्य के अंत में 'रहा होगा', 'रही होगी', 'गई होगी' आदि शब्द आते हैं।

2 हवा धीरे-धीरे बह रही है। — अपूर्ण वर्तमान काल
उसे भूख नहीं लगी। — सामान्य भूतकाल
शेर मांसाहारी जीव है। — सामान्य वर्तमान काल
तुम जाने कब सुधरोगे? — संभाव्य भविष्यत् काल
खेत जुत चुका था। — पूर्ण भूतकाल
शायद कल बादल रहे। — संभाव्य भविष्यत् काल

3 (क) आएँ (ख) बना रहा था (ग) खेल रहा होगा (घ) चमक रही है
(ङ) गया है

4 (क) आप आते, तो हम साथ चलते।
(ख) फुटबॉल मैच चल रहा था।
(ग) वह पुस्तक खरीदेगा।
(घ) बावर्ची खाना बना रहा होगा।
(ङ) शालू छोटे भाई को पढ़ा रही है।
(च) शायद बुआ चली ही जाएँ।

5 (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

6 मैंने कविता पढ़ी। — सामान्य भूतकाल
हो सकता है, मैं ना आ पाऊँ। — संभाव्य भविष्यत् काल
माँ आ रही होंगी। — संदिग्ध वर्तमान
मीनल अच्छी तैराकी करती थी। — पूर्ण भूतकाल
सोनल विद्यालय जा रही है। — अपूर्ण वर्तमान काल

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) **2** (ख) **3** (ग) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

एक कौआ था। वह डाल पर बैठकर अपनी ही धुन में काँव-काँव करता था। सभी जानवर और पक्षी उसका मजाक उड़ाते थे। वह कोयल की तरह गाना सुनाकर सबका मनोरंजन करना चाहता था। लेकिन उसकी बेसुरी आवाज़ सभी जानवरों को बोलने के लिए मज़बूर कर देती थी।

एक दिन वह डाल पर बैठा बहुत ही दुखी मन से सोच रहा था कि कोयल भी काली मैं भी काला; सब लोग उसे पसंद क्यों करते हैं। उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे।

एक दिन शाम का समय था। सभी जानवर अपने ठिकानों पर पहुँच गए थे। जंगल का राजा शेर शिकार करने नदी की तरफ़ निकल चुका था और कौए को भी बहुत प्यास लगी थी। उसने देखा कि शेर शिकारी के जाल में फँस चुका था। शेर बेचारा अपनी मदद के लिए किसी को पुकार भी नहीं सकता था क्योंकि सब उससे डरते थे। कौए से यह दृश्य देखा न गया। उसने आव देखा न ताव काँव-काँव करता उड़ान भर रहा था।

घने जंगल में उसकी कर्कश आवाज़ से झुँझलाकर सभी जानवर बाहर आ गए। चूहे भी अपने बिलों से बाहर निकल आए और उसे डाँटने लगे। कौए ने रोती हुई आवाज़ में सबको बताया लेकिन शेर की मदद के लिए कोई भी तैयार नहीं हो रहा था। गिलहरी और खरगोश के समझाने पर चूहों का दल तैयार हो गया और वे नदी की तरफ़ चल पड़े।

शेर को जाल में फँसा देखकर सभी चूहों ने जाल काटना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में शेर जाल से बाहर आ चुका था तथा खुश होकर कौए और चूहों को धन्यवाद दे रहा था। बाकी जानवर भी वहाँ आ पहुँचे थे। गिलहरी ने कौए से कहा, "आज सुरीली आवाज़ नहीं, कर्कश आवाज़ काम आई है। प्यार और दर्द से भरे दिल ने मदद की है।" शेर और सभी जानवर कौए को प्यार भरी नज़र से देखने लगे।

12. वाच्य

1 (क) क्रिया का वह रूप जिससे पता चले कि वाक्य का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव वाच्य कहलाता है।

(ख) वाच्य के भेद– वाच्य के तीन भेद हैं– कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य।

1. **कर्तृवाच्य–** जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता हो उनमें कर्ता स्वयं क्रिया करता है। इसलिए क्रिया का वाच्य कर्तृवाच्य कहलाता है। इन वाक्यों में क्रिया के लिंग तथा वचन कर्ता के अनुसार होते हैं; जैसे– माली घास काट रहा है।
2. **कर्मवाच्य–** वाक्य में कर्म की प्रधानता होने पर क्रिया का वाच्य कर्मवाच्य कहलाता है। इन वाक्यों में क्रिया के लिंग और वचन भी कर्म के अनुसार ही होते हैं; जैसे– मंजु के द्वारा निबंध लिखा गया।
3. **भाववाच्य–** वाक्य में यदि कर्ता और कर्म से अधिक भाव की प्रधानता हो तो वाच्य भाववाच्य के रूप में जाना जाएगा; जैसे– रमेश से लिखा नहीं जाता।

(ग) कर्तृवाच्य में वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है तथा क्रिया का सीधा संबंध कर्ता से होता है। इसमें वाक्यों में क्रिया के लिंग तथा वचन कर्ता के अनुसार होते हैं।

कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। क्रिया का सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है। इन वाक्यों में क्रिया के लिंग और वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

(घ) 1. इन वाक्यों में कर्ता या कर्म की प्रधानता न होकर केवल भाव की प्रधानता होती है।

2. इनमें कर्ता एवं कर्म के लिंग-वचन का क्रिया पर प्रभाव नहीं पड़ता।

(ङ) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. कर्ता के साथ 'से/के द्वारा' (करण कारक की विभक्ति) का प्रयोग करना चाहिए।
2. क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार कीजिए।
3. कर्म के साथ लगी विभक्ति को हटा दीजिए।

2 काव्या फूल तोड़ती है। — कर्तृवाच्य

दिव्या जूस नहीं पीती। — कर्तृवाच्य

बालक द्वारा रोटी खाई जा रही है। — कर्मवाच्य

उससे और नहीं चला जाता। — भाववाच्य

मुझसे अब सोया जाता है। — भाववाच्य

दीपक से पढ़ा नहीं जाता। — भाववाच्य

रेल चल रही है। — कर्तृवाच्य

चाची ने टोपी खरीदी। — कर्तृवाच्य

बकरी द्वारा दूध दिया जाता है। — कर्मवाच्य

बच्चे से खाया नहीं जाता। — भाववाच्य

3 (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

4 (क) लड़की से आँगन में सोया गया। (ख) महावीर से अँगूठी खरीदी गई।

(ग) उससे इतनी देर नहीं सोया जाता। (घ) उसने कहानी पढ़ ली।

(ङ) मैं दर्द नहीं सह सकता। (च) शिक्षक के द्वारा सबको सज़ा दी गई।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (ग) **3** (ख) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

वाहन चालकों ने सड़क पर जाम लगा रखा है। उनके द्वारा गाड़ियाँ आड़ी-तिरछी खड़ी की गई हैं। गाड़ियों के बीच में फँसी गाय से बाहर नहीं निकला जाता। सभी लोग खिड़कियों से बाहर देख रहे हैं। उनसे भी कुछ किया नहीं जाता। ट्रैफिक जाम होने के कारण लोगों से जल्दी घर नहीं जाया जाएगा। गाड़ियों के द्वारा धुआँ छोड़ा जा रहा है। इससे वायु प्रदूषण बढ़ जाएगा।

13. अविकारी शब्द (अव्यय)

1 (क) वे शब्द जिन्हें हम किसी भी लिंग, वचन, कारक के साथ प्रयोग करें, उनमें किसी भी तरह का कोई परिवर्तन नहीं होता, ऐसे शब्द अव्यय या अविकारी शब्द कहलाते हैं।

(ख) अव्यय के भेद हैं– क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात।

(ग) जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे– कछुआ धीरे-धीरे चलकर भी दौड़ जीत गया। यहाँ पर 'धीरे-धीरे' शब्द क्रिया की विशेषता बता रहा है इसलिए यह क्रियाविशेषण है।

(घ) जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों/पदों के साथ संबंध बताते हैं, संबंधबोधक कहलाते हैं। इनमें 'के ऊपर', 'के नीचे', 'के यहाँ', के बजाय', 'की अपेक्षा' इत्यादि शब्द इसी श्रेणी में आते हैं।

जो शब्द दो या दो से अधिक संबंधित शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ने का काम करते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं। अतः, और, तो, ताकि इत्यादि शब्द समुच्चयबोधक हैं।

(ङ) जब अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों/पदों के साथ संबंध बताते हैं, तो संबंधबोधक कहलाते हैं। लेकिन क्रियाविशेषण में शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं; जैसे–

सुशील अंदर बैठा है। (क्रियाविशेषण)

सुशील घर के अंदर बैठा है। (संबंधबोधक)

(च) समुच्चयबोधक के दो उपभेद हैं–

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक तथा व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

(पृष्ठ संख्या 93-95 देखें।)

(छ) विस्मयादिबोधक विस्मय, शोक, हर्ष, लज्जा, घृणा, तिरस्कार, ग्लानि इत्यादि भावों को दर्शाते हैं।

2 (क) खुशी दिन भर पढ़ती रही। (कालवाचक क्रियाविशेषण)

(ख) सभी छात्र ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। (रीतिवाचक क्रियाविशेषण)

(ग) आप यहाँ आकर बैठिए। (स्थानवाचक क्रियाविशेषण)

(घ) वह प्रतिदिन चिड़ियों को दाना देता है। (कालवाचक क्रियाविशेषण)

(ङ) हमें घर जल्दी जाना है। (रीतिवाचक क्रियाविशेषण)

3 (क) घर के पास नीम का पेड़ है।

(ख) बिल्ली मेज़ के ऊपर सो गई।

(ग) तरुण घर की ओर दौड़ा।

(घ) पिता जी के साथ बच्चे भी घूमने गए।

(ङ) मृणाल की अपेक्षा अनीता होशियार है।

4 (क) के पास (ख) या (ग) अहा! (घ) जल्दी से (ङ) अभी (च) रात

5 लेकिन : खरगोश तेज़ तो दौड़ा लेकिन जीत न सका।

चाहे : मैंने कॉफ़ी और चाय दोनों बनाए हैं आप जो चाहे ले सकते हैं।

ताकि : पौष्टिक भोजन लेना चाहिए ताकि बीमार न हों।

इसलिए : बारिश हो रही है इसलिए वह नहीं आएगा।

6 (क) भर – मेरा भाई भी सातवीं कक्षा में पढ़ता है।

(ख) केवल – अमित घमंड में किसी से बात तक नहीं करता।

(ग) ही – सलोनी गाने के साथ अच्छा नृत्य भी करती है।

(घ) मात्र – विनय केवल अपने माता-पिता का नाम रोशन करेगा।

(ङ) तक – तुम भी कुछ करो।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) 2 (घ) 3 (क) 4 (ख)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

14. विराम चिह्न

1 (क) भाषा बोलते समय और लिखते-पढ़ते समय हम कुछ विराम लेते हैं। लिखित रूप में रुकने के लिए कुछ चिह्न निश्चित होते हैं। इन चिह्नों को ही विराम चिह्न कहते हैं।

(ख) हम अपने भावों को शब्दों और वाक्यों द्वारा प्रकट करते हैं। इसलिए हमारी भाषा भावों से ओत-प्रोत होती है। भावों के उतार-चढ़ाव को प्रकट करने के लिए हमें अपनी हरेक अभिव्यक्ति के पश्चात रुकना पड़ता है। इन रुकावटों में कई तरह के भाव छिपे होते हैं– अपनी बात का एक वाक्य पूरा करना या वाक्य में थोड़ा रुकना, प्रश्न का भाव, आश्चर्य का भाव इत्यादि भावों को प्रकट करने के लिए कुछ चिह्न निश्चित किए गए हैं। जिन्हें विराम चिह्न कहते हैं। इनसे भाषा रुचिकर हो जाती है तथा समझने में आसानी होती है। इनके बिना तो भाषा अर्थहीन हो जाती है।

(ग) दो शब्दों के बीच तुलना, विरोध या समानता बताने की स्थिति में योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जबकि निर्देशक चिह्न का प्रयोग किसी बात को स्पष्ट लोगों करने, किसी उदाहरण की ओर संकेत करने, संवादों के पहले वाक्य के प्रवाह

में आने वाली संज्ञा की ओर संकेत करने, निर्देश देने वाले वाक्यों के बाद किया जाता है। इसका आकार योजक चिह्न से बड़ा होता है।

(घ) इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति, ग्रंथ, उपनाम आदि को प्रकट करने के लिए किया जाता है; जैसे– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'। दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किसी के कथन को ज्यों का त्यों दिखाने के लिए किया जाता है। जैसे– शास्त्री जी ने कहा, "जय जवान, जय किसान।"

(ङ) हंसपद को त्रुटिपूरक चिह्न भी कहते हैं। इसका प्रयोग वाक्य के बीच में कोई शब्द अथवा वाक्यांश छूट जाने पर उसे ऊपर-नीचे दर्शाने के लिए किया जाता है। जैसे– कविता करना सभी ∧ के बस की बात नहीं।

2 (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓

3 (क) सुख-दुख तो आते-जाते हैं।

(ख) टोकरी में सेब, केले, आम आदि हैं।

(ग) वाह! सब रुपये तुम्हारे कैसे हुए?

(घ) मुनि ने कहा, "वत्स, जाओ निष्ठा से रहो।"

(ङ) क्या श्रीराम के पुत्र लव-कुश वीर थे?

4 (क) यहाँ क्या हो रहा है?

(ख) वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।

(ग) तुम्हारी आदतें अच्छी नहीं हैं।

(घ) बापू ने कहा था, "सत्य का मार्ग ही उचित है।"

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (ग) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

चाचा-भतीजे ने चूरमा तैयार किया। चूरमे के लड्डू बनाए, पाँच लड्डू बने। अब चाचा-भतीजा दोनों सोचने लगे कि इन्हें बराबर-बराबर कैसे बाँटा जाए। आखिर उन्होंने तय किया कि गूँगे बनकर लेट जाते हैं; जो पहले बोले, वह दो खाए और जो न बोले, वह तीन खाए। दोनों बिना बोले, पैर फैलाकर लेट गए। यजमान ने आकर देखा तो न कोई बोलता था, न हिलता-डुलता था। बुलवाने की चेष्टा की, पर कोई जवाब नहीं देता था। सब सोचने लगे–'कौन जाने! किसी विषैले जानवर ने इन्हें काट न लिया हो।'

इकाई प्रश्न पत्र 1

1 भाषा विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होती है। एक भाषा के अंतर्गत उसकी उपभाषाएँ और उपभाषाओं के अंतर्गत उसकी बोलियाँ आ जाती हैं। जबकि भाषा का एक सीमित क्षेत्र में बोला जाने वाला स्थानीय रूप बोली कहलाता है।

2 (क) लिखित भाषा (ख) मौखिक भाषा (ग) लिखित भाषा (घ) लिखित भाषा

3 स्पर्श – म, ठ, फ; अंतस्थ – य, र, व; ऊष्म – श, ह; संयुक्त – क्ष, त्र

4 अंतत: = अं + त् + अ + त् + अ:

चाँद = च् + आँ + द् + अ

श्रमदान = श् + र् + अ + म् + अ + द् + आ + न् + अ

पर्वतीय = प् + अ + र् + व् + अ + त् + ई + य् + अ

5

मुक्ति	मुक्त	विशेषण	भाग-दौड़	भागना-दौड़ना	क्रिया
शीघ्रता	शीघ्र	अव्यय	दूरी	दूर	अव्यय

6

कर्ता	= कर्त्री	विधाता	= विधात्री
नेता	= नेत्री	पुत्रवान	= पुत्रवती
रोगी	= रोगिणी	ठग	= ठगनी

7 प्राण, बाल, होश, हस्ताक्षर

8 पुलिस ने लुटेरों की मदद नहीं की। (कर्ता कारक, कर्म कारक)

स्टेशन से गाड़ी चल पड़ी। (अपादान कारक)

मुझे अस्मिता की कविता पसंद आई। (संबंध कारक)

पेड़ पर चिड़िया बैठी है। (अधिकरण कारक)

9 किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान की ओर संकेत करने वाले सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं जबकि सार्वनामिक विशेषण संज्ञा के साथ प्रयोग किए जाते हैं।

10 (क) स्वयं (ख) कौन (ग) वह (घ) वह

11

(क)	लघु	लघुतर	लघुतम
(ख)	श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
(ग)	उत्कृष्ट	उत्कृष्टतर	उत्कृष्टतम
(घ)	सरल	सरलतर	सरलतम

12 (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

13 कालवाचक – आजकल महँगाई बहुत बढ़ गई है।

स्थानवाचक – गाँव में चारों ओर हरियाली ही हरियाली है।

परिमाणवाचक – इतना मत खाओ, बीमार पड़ जाओगे।

रीतिवाचक – खाना धीरे-धीरे चबाकर खाना चाहिए।

14. वाक्य में किसी शब्द/पद विशेष के बाद लगकर कुछ अविकारी शब्द उस शब्द को विशेष अर्थ देते हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं; जैसे– केवल, तक, ही, भी, सा इत्यादि।

15. शब्द-भंडार

1 (क) पर्यायवाची शब्दों में भिन्नता होते हुए भी शब्दों से लगभग एक ही अर्थ स्पष्ट होता है। जैसे– वनराज, सिंह, केसरी– शेर के नाम हैं।

जबकि एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द पढ़ने-सुनने में तो एक समान लगते हैं, परंतु अर्थ की दृष्टि से उनमें सूक्ष्म अंतर होता है। जैसे– अस्त्र और शस्त्र। अस्त्र फेंका जाने वाला हथियार होता है और शस्त्र हाथ में पकड़कर चलाने वाला।

(ख) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रयोग से भाषा को अनचाहे विस्तार से बचाया जाता है। अर्थात भाषा में संक्षिप्तता, स्पष्टता तथा सुंदरता आती है।

(ग) भाषा में जब दो शब्दों को योजक चिह्न लगाकर प्रायः साथ-साथ प्रयोग किया जाता है, तब उन शब्दों को शब्द-युग्म कहते हैं। ये शब्द-युग्म निम्न प्रकार के होते हैं–

1. पुनरुक्त शब्द-युग्म– इसमें एक ही शब्द का दो बार प्रयोग होता है जैसे–जल्दी-जल्दी, पीछे-पीछे इत्यादि।
2. विलोम शब्द-युग्म– ये शब्द-युग्म एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले होते हैं। जैसे–दिन-रात, ऊपर-नीचे, ठंडा-गरम, आगे-पीछे।

उपरोक्त शब्द-युग्मों के अलावा सार्थक-निरर्थक शब्द-युग्म, समानार्थी शब्द-युग्म भी होते है।

(घ) अनेकार्थी शब्दों में वे शब्द आते हैं जो एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ बताते हैं; जैसे– अपेक्षा– अपेक्षा का अर्थ है आशा और तुलना। इसके विपरीत पर्यायवाची शब्द एक जैसा अर्थ लिए होते हैं। जैसे– अतिथि – मेहमान, आगंतुक, पाहुन, अभ्यागत।

(ङ) जो शब्द पढ़ने और सुनने में 'समरूपी' अर्थात एक समान लगते हैं लेकिन उनके अर्थ और वर्तनी में भिन्नता होती है। ऐसे शब्द समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे– तरंग और तुरंग दोनों सुनने में एक जैसे लगते हैं लेकिन अर्थ अलग है; तरंग – लहर और तुरंग – घोड़ा

2

अग्नि	आग	अनल	चाँद	रजनीश	मयंक
धन	संपत्ति	दौलत	इच्छा	आकांक्षा	अभिलाषा
सरस्वती	शारदा	वीणापाणि	पुष्प	सुमन	फूल
पक्षी	खग	विहग	किरण	रश्मि	अंशु

3 (क) हानि (ख) कठिन (ग) निंदा (घ) दुरुपयोग
(ङ) व्यय (च) अनिच्छा

4 (क) कुल – रीतु के परिवार में कुल मिलाकर पाँच सदस्य हैं।
कूल – हरिद्वार में सभी लोग गंगा के कूल पर पूजा करते हैं।

(ख) नीर – चेन्नई में अत्यधिक बरसात होने से चारों तरफ़ नीर ही नीर था।
नीड़ – बुलबुल अपने नीड़ में बैठी है।

(ग) बलि – देवता को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने जानवर की बलि दे दी।
बली – दारा सिंह बली था।

5 (क) विश्वसनीय (ख) जिज्ञासु (ग) अत्याचारी
(घ) अनुपम (ङ) अंतर्यामी

6 (क) (✓) (ख) शस्त्र; अस्त्र (ग) खेद (घ) मूल्यवान (ङ) (✓)

7 (क) **वर्ण** भाषा की सबसे छोटी इकाई है।
(ख) इनसान का **पानी** एक बार चला जाए तो वापिस नहीं आता
(ग) हरी सब्ज़ियाँ, सलाद **आदि** खाना लाभकारी है।
(घ) कृष्ण का **बाल** रूप मन को मोहित करने वाला है।
(ङ) **अंबर** पर चाँद निकल आया है।
(च) समय पर **कर** देकर हम निश्चिंत हो सकते हैं।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (ग) **3** (क) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

1 न	य	न	3 आ	4 क	5 आ	शा
व	2 कृ	ठ	6 दि	7 न	दी	8 ना
जा	प	9 मा	सि	क	ड	का
त	ण	लि	10 अ	नु	11 प	म
12 अ	ने	क	सु	ल	तं	या
13 सा	रं	ग	र	14 ज	ग	ब
15 प	रो	प	का	री	16 न	ग

16. उपसर्ग व प्रत्यय

1 (क) ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के आगे जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता ला देते हैं या उसके अर्थ को बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे–

बे + घर = बेघर, स + फल = सफल

(ख) हिंदी भाषा में निम्नलिखित उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग– ये उपसर्ग संस्कृत से ही हिंदी में आए हैं। इन्हें तत्सम उपसर्ग कहते हैं। इन उपसर्गों से बने शब्द हैं – अमर, अजर, अभागा।
2. हिंदी के उपसर्ग– हिंदी में प्रयुक्त होने वाले हिंदी उपसर्ग तद्भव उपसर्ग कहलाते हैं। तद्भव उपसर्ग मूलतः संस्कृत के उपसर्ग से विकसित हुए हैं। जैसे– अ (उपसर्ग) = अछूत, अचेत, अथाह।
3. उर्दू/फ़ारसी के उपसर्ग– उर्दू/फ़ारसी भाषाओं से आए हिंदी में प्रयुक्त होने वाले उपसर्ग उर्दू या फ़ारसी के उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे–
   कम (उपसर्ग)– कमज़ोर, कमअक्ल।
4. अंग्रेज़ी के उपसर्ग – ये उपसर्ग अंग्रेज़ी भाषा से हिंदी में आए हैं। जैसे– सब इंस्पेक्टर, सब कमेटी।

(ग) धातु के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। (पृष्ठ संख्या 122-123 देखें।)

(घ) संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में जुड़कर जिन प्रत्ययों से क्रिया के अतिरिक्त शब्दों की रचना होती है, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। (पृष्ठ संख्या 123-126 देखें।)

2

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
आजीवन	=	आ	+	जीवन	अपवित्र	=	अ	+	पवित्र
अध्यापक	=	अधि	+	यापक	उनसठ	=	उन	+	सठ
नीरोग	=	नि	+	रोग	दुर्भाग्य	=	दुर्	+	भाग्य
प्रख्यात	=	प्र	+	ख्यात	निहत्था	=	नि	+	हत्था
कुख्यात	=	कु	+	ख्यात	अंतर्दशा	=	अंतर्	+	दशा

3

वि	=	विहीन	विज्ञान	अभि	=	अभिमान	अभिलाषा
दुर्	=	दुर्घटना	दुर्बल	ला	=	लापता	लाजवाब
उत्	=	उत्कर्ष	उत्थान	सर	=	सरपंच	सरताज
इक	=	साहसिक	आध्यात्मिक	आई	=	सुनाई	लड़ाई

4

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय	शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
गुणवान	=	गुण	+	वान	अल्पज्ञ	=	अल्प	+	ज्ञ
भारतीय	=	भारत	+	ईय	सूदखोर	=	सूद	+	खोर
पुष्पित	=	पुष्प	+	इत	दर्दनाक	=	दर्द	+	नाक

5 संस्कृत प्रत्यय युक्त शब्द– महिमा, गुरुत्व, दर्शनीय, जलमय, गरिमा, शैशव, महीना, रक्षक, लघुता, प्रशंसनीय

उर्दू प्रत्यय युक्त शब्द– नेतागिरी, तीरंदाज़, चूहेदानी, धोखेबाज़, जादूगर, सालाना, दर्दनाक, तोपची

6 (क) अत्याचार, रखवाला (ख) श्रद्धालु, उत्तम (ग) नौकरानी, झाड़न
(घ) ईमानदार, उद्धार (ङ) अनादर

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (ख) **3** (घ) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

पिंकी के वार्षिक परीक्षाफल की घोषणा हुई। जो छात्राएँ उत्तीर्ण थीं, वे खुश थीं जबकि अनुत्तीर्ण होने वाली छात्राएँ उदासी से भरी थीं। असफल होने वाली छात्राओं में पिंकी भी थी। वह जानती थी कि उसने पूरे वर्ष जो लापरवाही बरती, यह उसी का परिणाम था। उसके माता-पिता उसे दंडित न करें तथा वह सखियों के बीच अपमानित न हो इसलिए वह घर न जाकर शहर के बाहर की तरफ़ चल पड़ी। उसकी सखी पारुल ने देखा तो वह बिनबोले पिंकी का पीछा करने लगी।

17. संधि

1 (क) स्वर संधि में दो स्वरों का मेल होता है; जैसे– सु + आगत = स्वागत (उ + आ = वा) इसमें उ और आ दोनों स्वर हैं।

विसर्ग संधि मे विसर्ग के साथ स्वर और व्यंजन का मेल होता है; जैसे– निः + रस = नीरस।

(ख) दीर्घ संधि में ह्रस्व या दीर्घ (अ / आ / इ / ई / उ / ऊ) के बाद ह्रस्व या दीर्घ (अ / आ / इ / ई / उ / ऊ) आने पर दीर्घ (आ / ई / ऊ) हो जाते हैं।

वृद्धि संधि में अ या आ के बाद ए / ऐ आने पर 'ऐ' हो जाता है। अ या आ के बाद ओ या औ आने पर 'औ' हो जाता है।

(ग) यण संधि में इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद अन्य स्वर आने पर 'इ/ई' का 'य', 'उ/ऊ' का 'व्' और 'ऋ' का 'र्' हो जाता है तथा अगले वर्ण की मात्रा अलग से जुड़ती है।

(घ) 1. क्, च्, ट्, त्, प् के बाद यदि किसी वर्ग का तीसरा और चौथा वर्ण अथवा कोई स्वर आ जाए, तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा व्यंजन आ जाता है; जैसे– दिक् + गज = दिग्गज

2. क्, च्, ट्, त्, प् के बाद यदि न या म वर्ण आ जाए, तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन आ जाता है; जैसे– जगत् + नाथ = जगन्नाथ

(ङ) यदि विसर्ग के साथ किसी स्वर या व्यंजन का संयोग हो तो उस संधि को विसर्ग संधि कहा जाता है; जैसे– दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

2 तत् + लीन = तल्लीन
एक + एक = एकैक
महा + उत्सव = महोत्सव
सदा + एव = सदैव
निः + रस = नीरस
निः + कपट = निष्कपट

3 पर्यावरण = परि + आवरण　　स्वागत = सु + आगत

गायक = गै + अक　　उच्चारण = उत् + चारण

निश्छल = निः + छल　　हर्षोल्लास = हर्ष + उल्लास

तपोबल = तपः + बल　　संतोष = सम् + तोष

4 (क) मंद + अग्नि　(ख) तपः + वन　(ग) अन + उदार

(घ) नील + अंबर　(ङ) षट् + मास

5 (क) ✗　(ख) ✓　(ग) ✓　(घ) ✗　(ङ) ✓

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख)　**2** (क)　**3** (ख), बाकी सभी में विसर्ग संधि है।　**4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

शब्द	संधि-भेद	शब्द	संधि-भेद
सदैव	वृद्धि संधि	संसार	व्यंजन संधि
उपासना	दीर्घ संधि	मनोबल	विसर्ग संधि
निष्फल	विसर्ग संधि	दुष्कर	विसर्ग संधि
उज्ज्वल	व्यंजन संधि	अधोगति	विसर्ग संधि

18. समास

1 (क) परस्पर संबंध रखने वाले दो या अधिक शब्दों के मिलने के संयोग को समास कहते हैं।

(ख) संधि में वर्णों का ही मेल होता है (पहले शब्द या शब्दांश के अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण का), जबकि समास में कारक चिह्नों या शब्दों का ही लोप हो जाता है। उदाहरण –

हिम + आलय = हिमालय (अ + आ की संधि हुई और आ बना।)

हिम का आलय = हिमालय (परसर्ग का का लोप हो गया।)

(ग) जिस समास में दोनों में से कोई पद प्रधान नहीं होता, बल्कि कोई अन्य (तीसरा) पद प्रधान होता है, वह समास बहुव्रीहि समास कहलाता है।

(घ) तत्पुरुष समास में कारक चिह्न महत्त्वपूर्ण हैं इसलिए कारक की दृष्टि से तत्पुरुष समास के छह भेद होते हैं –

1. कर्म तत्पुरुष　2. करण तत्पुरुष　3. संप्रदान तत्पुरुष
4. अपादान तत्पुरुष　5. संबंध तत्पुरुष　6. अधिकरण तत्पुरुष

(पृष्ठ संख्या 141-142 देखें।)

(ङ) यदि समस्तपद में उपमेय-उपमान या विशेषण-विशेष्य का संबंध हो तो कर्मधारय समास होगा।

(च) द्वंद्व समास में एक नहीं बल्कि दोनों ही पद समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। सामान्यत: द्वंद्व समास में विग्रह करने पर योजक के रूप में 'और', 'अथवा', 'तथा' अथवा 'या' का प्रयोग होता है।

(छ) इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है और विग्रह करने पर समूह या समाहार जैसे शब्द लगाए जाते हैं, यही द्विगु समास की विशेषता है।

2

समस्तपद	**विग्रह**	**समास**
प्रतिदिन	हर दिन	अव्ययीभाव समास
सुख-दुख	सुख और दुख	द्वंद्व समास
दशानन	दस हैं आनन जिसके अर्थात रावण	बहुव्रीहि समास
चंद्रमुख	चंद्रमा के समान मुख	कर्मधारय समास
गंगाजल	गंगा का जल	तत्पुरुष समास
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास
चौराहा	चार राहों का समूह	द्विगु समास
रोगमुक्त	रोग से मुक्त	तत्पुरुष समास

3

तत्पुरुष	:	चिड़ियाघर, युद्धस्थल, हस्तलिखित, राजगृह
कर्मधारय	:	लौहपुरुष, नीलकंठ
द्विगु	:	शंताब्दी, चवन्नी, तिराहा
द्वंद्व	:	धर्म-अधर्म
बहुव्रीहि	:	पीतांबर, गजानन
अव्ययीभाव	:	प्रतिपल, यथास्थान, भरसक

4

नव ग्रहों का समाहार	नवग्रह	लाभ और हानि	लाभ-हानि
पीला (पीत) है जो अंबर	पीतांबर	ग्रंथ रूपी रत्न	ग्रंथरत्न
तीन भुजाओं का समूह	त्रिभुज	आधा है जो पका	अधपका
मेघ के समान नाद है जिसका	मेघनाद	ग्राम को गत	ग्रामगत
रस से भरा	रसभरा	रात ही रात में	रातोंरात
लोगों की सभा	लोकसभा	विष धारण करने वाला	विषधर

5

	समास-विग्रह	**समास**
(क) हमें <u>यथाशक्ति</u> औरों की मदद करनी चाहिए।	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव
(ख) पिता जी नई <u>आरामकुर्सी</u> लाए।	आराम के लिए कुर्सी	तत्पुरुष
(ग) लोग आज भी <u>गिरिधर</u> को पूजते हैं।	गिरि धारण किया है जिसने अर्थात कृष्ण	बहुव्रीहि
(घ) <u>राजकुमार</u> हिरन के पीछे भागा।	राजा का कुमार	तत्पुरुष
(ङ) वह <u>रात-दिन</u> मेहनत करके सफल हुआ है।	रात और दिन	द्वंद्व

(च)	उस घुड़सवार को कोई नहीं पकड़ पाया।	घोड़े पर सवार	तत्पुरुष
(छ)	महात्मा जी के चरणकमल पड़ने से सभी धन्य हो गए।	महान है जो आत्मा कमल के समान चरण	कर्मधारय कर्मधारय

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (ख) **3** (क) **4** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

1. बेशक 2. कमलनयन 3. नरोत्तम 4. महात्मा 5. मालगोदाम
6. महावीर (कर्मधारय) 7. रसभरा 8. रातदिन 9. नवरस
10. सत्याग्रह 11. हस्तलिखित

19. पद-परिचय

1 (क) वर्णों का सार्थक समूह शब्द होता है। शब्द स्वतंत्र होते हैं। शब्द तब तक शब्द रहता है जब तक वाक्य से अलग होता है। वाक्य में प्रवेश करने के बाद व्याकरणिक नियमों वचन, लिंग, कारक आदि में बँध जाता है तो उसका रूप बदल जाता है अर्थात शब्द शब्द न रहकर पद बन जाता है।

(ख) व्याकरणिक दृष्टि से शब्द विशेष का परिचय पद-परिचय कहलाता है। पद परिचय में पद को अलग-अलग करके प्रत्येक पद का प्रकार, भेदोपभेद बताना, वाक्य में उसके दूसरे पदों से संबंध बताना, उसके कार्य बताना होता है। पद-परिचय में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक का पद परिचय दिया जाता है।

(ग) ऐसों से मत उलझो। (संज्ञा) ऐसे-ऐसे काम मत करो। (विशेषण)

ऐसे चलोगे, तो गिरोगे। (क्रियाविशेषण)

(घ) संज्ञा पद का परिचय देते समय हमें सर्वप्रथम संज्ञा के भेद बताने चाहिए कि वो व्यक्तिवाचक, जातिवाचक या भाववाचक है। इसमें कौन-सा लिंग है – स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग। इसके साथ-साथ एकवचन है या बहुवचन इस बात को भी स्पष्ट करना चाहिए।

कारक भेदों – कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन की जानकारी देना भी संज्ञा पद-परिचय का प्रमुख हिस्सा है। संज्ञा का वाक्यगत क्रिया या अन्य शब्द के साथ संबंध भी बताना चाहिए।

(ङ) संबंधबोधक पदों के पद-परिचय में उनका भेद तथा संज्ञा/सर्वनाम से संबंध का उल्लेख किया जाता है।

समुच्चयबोधक पदों के पद-परिचय में उनका भेद तथा किन पदों या उपवाक्यों को जोड़ रहा है, बताया जाता है।

(च) संज्ञा और सर्वनाम दोनों में ही लिंग, वचन, कारक और अन्य पदों के साथ संबंध बताया जाता है।

2 (क) संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग

(ख) भाववाचक, बहुवचन, स्त्रीलिंग

(ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(घ) सकर्मक क्रिया, वर्तमान काल

(ङ) भाववाचक, पुल्लिग, एकवचन

3 (क) गुणवाचक (ख) कालवाचक (ग) पुल्लिग (घ) क्रिया (ङ) जातिवाचक

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (ख) **3** (क) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

20. वाक्य विचार

1 (क) सार्थक शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह, जो अपेक्षित अर्थ देता हो, वाक्य कहलाता है। जैसे– सीमा मेरी बहन है।

(ख) वाक्य के अनिवार्य तत्व–

1. सार्थकता – वाक्य अपेक्षित अर्थ देने वाला होना चाहिए।
2. योग्यता – योग्यता से तात्पर्य है कि वाक्य निहित उचित अर्थ का ज्ञान कराए।
3. आकांक्षा – वाक्य पूरा होना चाहिए अर्थात् कोई ऐसा शब्द न छूटा हो, जिससे वाक्य अधूरा रह जाए।
4. निकटता – वाक्य के पदों के बीच लिखते एवं बोलते समय अपेक्षित निकटता ज़रूरी है।
5. पदक्रम – वाक्य में पदों का सही क्रम होना चाहिए।
6. अन्वय – वाक्य में आए पदों के बीच लिंग, वचन व कारक संबंधी एकरूपता ही अन्वय या अन्विति हैं।

(पृष्ठ संख्या 154-155 देखें।)

(ग) अर्थ के आधार पर वाक्यों के भेद–

1. विधानवाचक 2. निषेधवाचक 3. आज्ञावाचक 4. प्रश्नवाचक
5. इच्छावाचक 6. संदेहवाचक 7. विस्मयादिबोधक 8. संकेतवाचक

(पृष्ठ संख्या 156 देखें।)

(घ) जिस वाक्य में समान स्तर के उपवाक्य समुच्चयबोधकों से जुड़े होते हैं, वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। जैसे– वह अमीर है और घमंडी है।

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और शेष उपवाक्य उस पर आश्रित होता है, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। जैसे –

सारा सामान भीग गया, क्योंकि बारिश तेज़ थी।

(ङ) बड़े वाक्य के अंतर्गत आए छोटे-छोटे वाक्य जिन्हें योजक शब्द 'और', 'इसलिए', 'कि', 'जो', जिसे इत्यादि शब्द जोड़ते हैं, उन्हें उपवाक्य कहते हैं। उपवाक्य के तीन भेद है–

1. संज्ञा उपवाक्य 2. विशेषण उपवाक्य 3. क्रियाविशेषण

(पृष्ठ संख्या 158 देखें।)

(च) वाक्य विश्लेषण में सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है। तीनों वाक्यों की विश्लेषण प्रक्रिया भिन्न है।

वाक्य संश्लेषण में एक से अधिक वाक्यों को आपस में जोड़ा जाता है।

वाक्य- संश्लेषण द्वारा सरल, संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों की रचना की जाती है।

(पृष्ठ संख्या 158-159 देखें।)

2 (क) मिश्र वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य

(घ) सरल वाक्य (ङ) मिश्र वाक्य

3 (क) इच्छावाचक (ख) प्रश्नवाचक (ग) आज्ञावाचक

(घ) विधानवाचक (ङ) संकेतवाचक

4 (क) जो व्यक्ति संतोषी होता है वह सुखी रहता है।

(ख) उसके आने पर मैं चल दिया।

(ग) सबकी इच्छा है आज घूमने चलो।

(घ) जैसे ही माली आया वैसे ही बच्चे भाग गए।

(ङ) वर्षा शुरू हुई और सब छिप गए।

5 (क) पतली लड़की मानसी दिन-रात पढ़ती है।

(ख) सब लोग महँगाई से बहुत परेशान हैं।

(ग) मोहन के मामा जी बैंक में पाँच वर्षों से मैनेजर थे।

(घ) घने जंगल में बहुत डर लगा।

(ङ) वह मोटा लड़का खाना खाकर जल्दी सो गया।

6 (क) खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।

(ख) हम सायंकाल पार्क जाते हैं।

(ग) कार्तिक को अपना काम करने दो।

(घ) सुरीला गाना सुनकर आनंद आया।

(ङ) यहाँ कूड़ा मत फेंको।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (ख) **3** (ग) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

21. पदबंध एवं उपवाक्य

1 (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई 'वर्ण' है और वर्णों के संयोग से शब्द बनता है। शब्द वाक्य में प्रयोग होने पर 'पद' बन जाता है। कई बार एक से अधिक पद मिलकर एक ही पद का काम करते हैं। ऐसे पद समूहों को पदबंध का नाम दिया जाता है अर्थात एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरण इकाई का काम करते हैं, तो वह पदबंध कहलाता है। पदबंध का अर्थ है किसी पद और उसके साथ बँधे हुए अन्य पद।

(ख) पदबंध के पाँच भेद हैं –

1. संज्ञा पदबंध – टेलीविजन पर रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रेरक कार्यक्रम भी आते हैं।
2. सर्वनाम पदबंध – रात-दिन सपने देखने वाला वह अंतत: कहीं नहीं पहुँच पाया।
3. विशेषण पदबंध – दिन-रात मेहनत करने वाली महिलाएँ भी अपना हक नहीं ले पातीं।
4. क्रिया पदबंध – फूल खिल गए हैं।
5. क्रियाविशेषण पदबंध – हम मन लगाकर हमेशा पढ़ते हैं।

(पृष्ठ संख्या 163-164 देखें।)

(ग) क्रिया पदबंध – वाक्य में क्रिया का कार्य करने वाले पदबंध क्रिया पदबंध कहलाते हैं। जैसे– खुशबू फैल रही है।

उपरोक्त वाक्य में 'फैल रही है', पदबंध क्रिया है।

क्रियाविशेषण पदबंध – वाक्य में क्रियाविशेषण का काम करने वाले पदबंध क्रियाविशेषण पदबंध कहलाते हैं। जैसे– उसने बहुत धीरे-धीरे चढ़ाई चढ़ी।

उपरोक्त वाक्य में 'बहुत धीरे-धीरे' क्रिया की विशेषता बता रहा है। अत: क्रियाविशेषण पदबंध है।

(घ) प्रधान उपवाक्य में मुख्य क्रिया का कर्ता उपस्थित होता है और वह स्वतंत्र होता है।

प्रधान उपवाक्य पर आश्रित रहने वाले उपवाक्य आश्रित उपवाक्य होते हैं। इन उपवाक्यों का अर्थ प्रधान उपवाक्य पर निर्भर रहता है।

(ङ) आश्रित उपवाक्य के तीन भेद हैं–

1. संज्ञा उपवाक्य 2. विशेषण उपवाक्य 3. क्रियाविशेषण उपवाक्य

(पृष्ठ संख्या 165 देखें।)

(च) विशेषण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य में आए संज्ञा या सर्वनाम पदों की विशेषता बताते हैं। विशेषण उपवाक्य में जो, जिसने, जिन्होंने, जैसे योजक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

2 (क) सबकी आँखों में चुभने वाले व्यक्ति अच्छे नहीं होते। संज्ञा पदबंध

(ख) हम सबकी सहायता करने वाली वे अब कहीं और चली गई हैं। सर्वनाम पदबंध

(ग) बहुत सोच-समझकर कदम उठाया करो। क्रियाविशेषण पदबंध

(घ) हम सब चलते ही जा रहे हैं। क्रिया पदबंध

3 (क) विशेषण पदबंध (ख) क्रियाविशेषण पदबंध (ग) सर्वनाम पदबंध

(घ) संज्ञा पदबंध (ङ) विशेषण पदबंध

4 (क) संज्ञा उपवाक्य (ख) क्रियाविशेषण उपवाक्य

(ग) विशेषण उपवाक्य (घ) संज्ञा उपवाक्य

(ङ) विशेषण उपवाक्य

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) **2** (ग) **3** (ग) **4** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

22. मुहावरे व लोकोक्तियाँ

1 (क) लोकोक्तियाँ अनुभव पर आधारित अर्थात लोकप्रचलित होती हैं तथा ये अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं। जबकि मुहावरे वाक्य में विशेषता लाने वाले वाक्यांश होते हैं और वाक्य के मध्य में प्रयुक्त होते हैं। वाक्य प्रयोग में मुहावरों में लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार परिवर्तन आता है परंतु लोकोक्तियाँ अपने मूल रूप में ही रहती हैं।

(ख) मुहावरे-लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में विलक्षणता आ जाती है। इनके प्रयोग से भाषा में अलग ही आकर्षण और प्रभाव आ जाता है।

लोकोक्तियाँ या कहावतें तो कथन को वैसे ही पुष्ट कर देती हैं। जैसे– 'हाथ कंगन को आरसी क्या' अर्थात प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

2 उल्लू बनाना → मूर्ख बनाना

थोथा चना बाजे घना → गुणहीन व्यक्ति ज़्यादा बोलता है

हाथ पर हाथ रखकर बैठना → निठल्ले बैठना

अंधों में काना राजा → मूर्खों में थोड़ा समझदार भी श्रेष्ठ

मुँह में पानी आना → ललचाना

एक अनार सौ बीमार → चीज़ कम, चाहने वाले अधिक

नमक-मिर्च लगाना → छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना

3 बाल की खाल निकालना — उल्टी गंगा बहाना

कान पर जूँ न रेंगना — किताबी कीड़ा होना

अक्ल पर पत्थर पड़ना — जले पर नमक छिड़कना

4 (क) अपने मित्र से उम्मीद थी, पर उसने अँगूठा दिखा दिया।

(ख) अपने गलत कामों से अपनी ही नाक कटवाकर तुम्हें क्या मिलता है?

(ग) बहती गंगा में हाथ धोने में ही समझदारी होती है।

(घ) ग्रामीण शहरों की चमक-दमक देखकर जाते हैं, परंतु यह भूल जाते हैं कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

(ङ) आज के समय में गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले व्यक्तियों की कमी नहीं है।

5 (क) मन चंगा तो कटौती में गंगा

(ख) आप भला तो जग भला

(ग) आम के आम और गुठलियों के दाम

(घ) काला अक्षर भैंस बराबर

(ङ) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (ख) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

23. अलंकार

1 (क) भाषा को ऐसे शब्दों से सजाना जो उनमें आंतरिक और बाह्य दोनों तरह की सुंदरता पैदा करते हैं, उन्हें अलंकार कहते हैं। अलंकार दो शब्दों का योग है– अलम + कृ। 'अलम' का अर्थ है– भूषित करना। 'कृ' का अर्थ है– करने वाला। अर्थात जो आभूषित करता है वो अलंकार है।

(ख) जिस प्रकार अलंकारों, गहनों या आभूषणों से आभूषित होकर कोई स्त्री अधिक खूबसूरत लगती है। उसी प्रकार काव्य भी अलंकारों से आभूषित होकर अत्यधिक आकर्षित हो जाता है। अलंकार केवल बाह्य (शब्दों की) सजावट ही नहीं बल्कि आंतरिक (भाव) की सजावट भी करते हैं।

(ग) शब्दों से भाषा में चमत्कार लाने वाले अलंकार शब्दालंकार कहलाते हैं। शब्दालंकार के भेद निम्नलिखित हैं–

1. अनुप्रास अलंकार 2. यमक अलंकार 3. श्लेष अलंकार

(पृष्ठ संख्या 175-176 देखें।)

(घ) शब्दों से भाषा में चमत्कार लाने वाले अलंकार शब्दालंकार कहलाते हैं। जहाँ शब्द को बदल देने, उसका लगभग समानार्थी रख देने के बाद भी चमत्कार बना रहे, वहाँ अलंकार शब्द में नहीं, बल्कि उसके अर्थ में माना जाएगा। ऐसे वर्णनों में जब अलंकार की छटा के दर्शन होते हैं, तो उन प्रयोगों को अर्थालंकार कहते हैं।

2 (क) उपमा (ख) रूपक (ग) उत्प्रेक्षा (घ) अतिशयोक्ति (ङ) अनुप्रास

3 (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

4 (क) श्लेष– जो रहीम गति दीप की कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारों करै, बढ़ै अँधेरो होय।।

(ख) उपमा– हाय फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।

(ग) यमक– कनक-कनक से सौ गुना मादकता अधिकाय।

(घ) रूपक– पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (घ) **3** (ख) **4** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

इकाई प्रश्न पत्र 2

1 चूड़ियाँ चारण पक्षी

2 आवरण – अनाचरण
अपेक्षा – सापेक्षता (गलत जोड़े हैं।)

3 पाप – धर्म के विरुद्ध अपराध – कानून के विरुद्ध
अस्त्र – फेंका जाने वाला हथियार शस्त्र – हाथ में पकड़कर चलाने वाला हथियार
दुख – किसी शोक में दुखी खेद – पश्चाताप से भरा दुख

4 जो करने योग्य न हो = अयोग्य व्याकरण जानने वाला = वैयाकरण
जो नया आया हो = नवागत

5

आक	तैराक	खतरनाक
अक्कड़	भुलक्कड़	पियक्कड़
अक	धावक	पालक

6

प्रत्येक	हर एक	अव्ययीभाव समास
देशनिकाला	देश से निकाला	तत्पुरुष
विद्याधन	विद्या रूपी धन	कर्मधारय

7

जगत् + नाथ	जगन्नाथ	व्यंजन संधि
वाक् + ईश	वागीश	व्यंजन संधि
गण + ईश	गणेश	गुण संधि

8 दही जम गया है।

मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ है।

मुझे अमरूद अच्छा लगता है।

9 भाषा की सबसे छोटी इकाई 'वर्ण' है और वर्णों के संयोग से शब्द बनता है। शब्द वाक्य में प्रयोग होने पर 'पद' बन जाता है। कई बार एक से अधिक पद मिलकर एक ही पद का काम करते हैं। ऐसे पद समूहों को पदबंध का नाम दिया जाता है अर्थात एक से अधिक पद मिलकर एक व्याकरण इकाई का काम करते हैं, तो वह पदबंध कहलाता है। पदबंध का अर्थ है किसी पद और उस के साथ बँधे हुए अन्य पद।

10 अनुप्रास अलंकार उपमा अलंकार उत्प्रेक्षा अलंकार

11 संज्ञा उपवाक्य विशेषण उपवाक्य विशेषण उपवाक्य

12 वाक्य में क्रिया का विषय बताने वाला रूप वाच्य कहलाता है। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–

1. **कर्तृवाच्य–** इसमें कर्ता की प्रधानता होती है। जैसे– कविता सोती है।
2. **कर्मवाच्य–** जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है, उनकी क्रिया का वाच्य कर्मवाच्य कहलाता है। जैसे– रोहित ने ककड़ी खाई।
3. **भाववाच्य–** जिन वाक्यों में कर्ता और कर्म दोनों में से कोई प्रधान न हो बल्कि भाव और विचार की प्रधानता हो, तो क्रिया का वाच्य भाववाच्य कहलाता है। जैसे– बच्चों से चिल्लाया जाता है।

रचना खंड

1. रचनात्मक अभिव्यक्ति

1 बच्चे स्वयं अभ्यास करें।

2 (क) चित्रकला के शौकीन आइए रंग-बिरंगी दुनिया में यानी चित्रों के संसार में।

कागज़ पर बिखरे हुए रंग आपको बोलते हुए प्रतीत होंगे।

इस चित्र-प्रदर्शनी में कहीं खूबसूरती तो कहीं सत्य को उकेरा गया है। तो आइए हमारी चित्रकला प्रदर्शनी में।

स्थान

दिल्ली

(ख) विद्यालय में आयोजित होने वाले खेल-दिवस पर रिपोर्ट।

10 दिसंबर, 20××। इस दिन का सभी को बेसब्री से इंतजार था। आज के दिन हर साल हमारे स्कूल में खेल-दिवस का आयोजन होता है। सभी छात्र और छात्राएँ स्कूल के प्रांगण में एकत्रित हो गए थे। प्रतियोगिता की सभी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। प्रांगण में एक तरफ़ मंच का आयोजन था। मंच बहुत सुंदर बना हुआ था। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिता का आरंभ किया। उन्होंने खेल और उनकी उपयोगिता के बारे में भी जानकारी दी। उसके बाद खेल शुरू हुए तथा जीतने वाले छात्रों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार व प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अग्रवाल ने किया।

(ग), (घ), (ङ) बच्चे स्वयं करें।

3 (क) **शीर्षक** – धन की आवश्यकता

धन मानव-जीवन की भौतिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अति आवश्यक है। धन बहुत कुछ है परंतु सब कुछ नहीं। परिश्रम से अर्जित किया गया धन अगर अच्छे कामों धर्म, शिक्षा, गरीबों की सहायता आदि में लगे तो धन वरदान है अन्यथा अभिशाप। धन के साथ-साथ मानव-मूल्य भी ज़रूरी हैं।

(ख) बच्चे स्वयं करें।

2. अपठित गद्यांश

(क) 1. शिक्षा आज के युग की प्रथम आवश्यकता है।

2. शिक्षा से ही मानव अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनता है। शिक्षित व्यक्ति ही एक सभ्य समाज का निर्माण कर सकता है।

3. सरकार द्वारा साक्षरता-अभियान, प्रौढ़ शिक्षा-अभियान, ईच वन-टीच वन जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं।

4. ईच वन-टीच वन कार्यक्रम के तहत हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति एक निरक्षर/अनपढ़ को साक्षर बनाएगा।

5. पशु के समान, साक्षर करने के लिए अभियान

(ख), (ग) बच्चे स्वयं करें।

3. अपठित काव्यांश

(क) 1. यहाँ रीढ़ सीधी रखने का अर्थ आत्मविश्वास और हिम्मत रखने से है।

2. ग्रह-नक्षत्रों के अनुकूल चलने वालों का जीवन स्थिर हो जाता है। समय निकल जाता है और वे शुभ समय का इंतजार करते रहते हैं। वे कर्मशील नहीं होते। वे समय के हाथों की कठपुतली बनकर रह जाते हैं।

3. जिनके अंदर हिम्मत और आत्मविश्वास होता है तथा जो कर्मशील होते हैं वही अपने हाथों के चाबुक से अपनी तकदीर को चलाते हैं।

4. तारे अनुकूल होने का अर्थ है– 'शुभ समय', अर्थात जिसके अंतर्गत कार्य आरंभ किया जाए।

5. तकदीर – भाग्य, किस्मत
बाधा – रुकावट, विघ्न

(ख) बच्चे स्वयं करें।

(ग) 1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)

4. पत्र लेखन

(क) 10 ए, सेक्टर 4, रूप नगर
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
दिनांक: 4 फरवरी, 20××
आदरणीय दादी जी,
चरण स्पर्श

आशा करती हूँ कि आप लोग पूरी तरह से स्वस्थ होंगे। हम सब भी यहाँ पर कुशलतापूर्वक हैं। पिछले दिनों आपका स्वास्थ्य खराब चल रहा था। अब आपकी तबीयत कैसी है? यहाँ सभी बहुत चिंतित हैं। ईश्वर की कृपा से अब आप स्वस्थ होंगी। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप आगे भी हमेशा स्वस्थ और तंदुरुस्त रहें। दादी जी हम शीघ्र ही आपके पास आकर आशीर्वाद लेंगे। अब पत्र समाप्त करती हूँ। आने पर ढेर सारी बातें करेंगे।

प्रणाम
आपकी पोती
सलोनी

(ख) 202-बी, तारा नगर
दिल्ली
दिनांक: 5/2/20××
प्यारी मौसी
सादर नमस्ते!

ईश्वर की कृपा से हम सब यहाँ कुशलपूर्वक हैं और आपकी कुशलता की भी कामना करते हैं। मौसा जी, सिद्धार्थ और रीतु कैसे हैं? हम सब चाहते हैं कि इस बार गर्मी की छुट्टियों में आप लोग देहरादून आएँ ताकि हम सब मिलकर खूब मौज-मस्ती करें और यहाँ के मौसम का आनंद लें। मुझे आपके आने का बेसब्री से इंतज़ार रहेगा। बाकी बातें आने पर।

आपकी भानजी
रजनी

बाकी पत्र लिखने का अभ्यास छात्र स्वयं करें।

5. अनुच्छेद लेखन

काल करै सौ आज कर ... / समय का महत्व

1. काल करै सौ आज कर ... इस कहावत में पूरी तरह से समय के महत्व को दर्शाया गया है। किसी भी काम को सुनियोजित तरीके से करने के लिए समय का बहुत महत्व है। कल पर छोड़ने वाला काम कभी पूरा नहीं होता। समय निकल जाता है और हम हाथ मलते रह जाते हैं। समय का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। जीवनपर्यंत समय के साथ चलना चाहिए नहीं तो हमेशा ज़िंदगी की दौड़ में पीछे रह जाओगे। सूरज समय से उदय होता है तथा समय से अस्त। संपूर्ण प्रकृति समय का पालन करते हुए दिखाई पड़ती है। इनसान को भी प्रकृति से सीख लेनी चाहिए तथा अपना प्रत्येक काम समय से पूरा कर लेना चाहिए। समय का पालन न करने वाले लोग ज़िंदगी भर पछताते हैं तथा अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर पाते।

शिक्षा का महत्व

5. शिक्षा का क्षेत्र सीमित न होकर विस्तृत है। व्यक्ति जीवन से लेकर मृत्यु तक शिक्षा का पाठ पढ़ता है। ज्ञान का अर्थ केवल शब्द ज्ञान नहीं बल्कि अर्थ ज्ञान है। यदि संपूर्ण पढ़े हुए विषय का अर्थ न जाना जाए तो यह गधे की पीठ पर रखे हुए चंदन के भार के समान परिश्रम कारक या निरर्थक होता है। विद्या सर्वश्रेष्ठ धन है। इसे चोर भी चुरा नहीं सकता और दूसरों को देने पर बढ़ता है। विदेश में विद्या ही सबसे अच्छा मित्र है। विद्या से विनय, विनय से योग्यता, योग्यता से धन और धर्म तथा धर्म से सभी सुखों को प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान से बुद्धि तेज़ होती है। जहाँ अनेक राजाओं ने तलवार चलाकर, हिंसा करके अपने राज्य व साम्राज्य को फैलाया वहीं चाणक्य ने

अपनी बुद्धि से संपूर्ण नंद वंश का नाश कर चंद्रगुप्त को सिंहासन पर बैठाया। यह जीत बुद्धि की थी और इसे ज्ञान ने ही आगे बढ़ाया था। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान के प्रकाश से शुभाशुभ, भले-बुरे की पहचान कराके आत्मविश्वास की प्रेरणा देती है। उन्नति के सोपान पर चढ़ाती है। शिक्षा के अभाव में हम एक अच्छे लोकतंत्र की कल्पना नहीं कर सकते।

बाकी अनुच्छेद छात्र स्वयं लिखें।

6. निबंध लेखन

1. मेरा प्रिय पर्व

वैसे तो सभी त्योहार मुझे अत्यंत प्रिय हैं, परंतु होली का त्योहार मुझे सबसे अच्छा लगता है। राग-रंग से भरा पर्व होली हिंदुओं का लोकप्रिय पर्व है। यह फाल्गुन माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह पर्व बसंत का संदेशवाहक है। इस समय प्रकृति अपने रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपने चरमोत्कर्ष पर होती है।

बसंत पंचमी के दिन से ही होली का त्योहार आरंभ हो जाता है। सरसों के खेत लहलहाने लगते हैं। चारों ओर उपवन में सुंदर फूलों की छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का हृदय खुशी से नाच उठता है। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ भूलकर ढोलक तथा झाँझ-मँजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों ओर रंगों की फुहार फूट पड़ती है।

होली के पर्व से एक पौराणिक कथा जुड़ी है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में हिरण्यकश्यप नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। वह इतना घमंडी हो गया था कि स्वयं को ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर भक्त था। हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र को कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा।

हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि आग उसे जला नहीं सकती। हिरण्यकश्यप ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे। किंतु आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद बच गया। ईश्वर भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है।

होलिका दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है। यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है। होली के दिन घरों में खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न व्यंजन बनाए जाते हैं। गाँवों में लोग देर रात तक होली के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं।

होली से अगला दिन दुलहंडी कहलाता है। इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है। लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते

हैं। यह समता, प्रेम और उल्लास के इस पर्व को और अधिक सुंदर व रोचक रूप प्रदान करने का सराहनीय प्रयास है। रंगों के इस त्योहार की सभी बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं।

बाकी निबंध छात्र स्वयं लिखें।

7. चित्र वर्णन

1 इस चित्र में गणतंत्र दिवस की परेड को दर्शाया गया है जहाँ सेना की कई टुकड़ियाँ परेड करती हुई आगे बढ़ती जा रही हैं। दर्शक दीर्घा में दर्शकगण परेड देख रहे हैं। परेड के दोनों तरफ तिरंगे लहरा रहे हैं। दूर राष्ट्रपति भवन भी दिखाई दे रहा है।

2 यह दृश्य सफ़ाई अभियान से संबंधित है। इसमें कुछ पुरुष एवं महिलाएँ साफ़-सफ़ाई करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सभी ने दस्ताने और मास्क पहन रखे हैं। स्वच्छता रखकर हम बीमारियों से बचे रहते हैं। हमें अपने आस-पास साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखना चाहिए।

बाकी चित्र वर्णन बच्चे स्वयं करें।

8. कहानी लेखन

1 एक कौए और किसान में बहुत गहरी दोस्ती थी। किसान कौए को रोज़ खाना और पानी देता था। कौआ खाना खाकर पानी पीता तथा एक नज़र प्यार से किसान को देखता और फुर्र से उड़ जाता। कौए को भविष्य की बातें पहले से ही पता होने का वरदान प्राप्त था। इस तरह एक दोस्त दूसरे दोस्त को होने वाली घटनाओं के बारे में पहले से बता देता था। एक दिन कौए ने किसान से कहा कि अबकी बार केवल पहाड़ों में ही वर्षा होगी। फिर क्या था! किसान पहाड़ों की ओर चल पड़ा, पथरीली ज़मीन को उपजाऊ करने। सभी उसका मज़ाक उड़ाने लगे लेकिन उसने एक न सुनी और खेत तैयार करके बीज डाल दिए। आखिरकार कौए की बात सच निकली, पहाड़ों पर खूब बारिश हुई। परिणामस्वरूप खूब अनाज पैदा हुआ।

कुछ समय पश्चात अपने दोस्त के लिए चिंतित कौए को कुछ अच्छा न होने का अहसास हुआ। उसने अगली फ़सल में कीड़ा लगने की बात कही। दोस्त की मेहनत बेकार न जाए इसलिए कौए ने सभी पक्षियों को बुलाकर कीड़े समाप्त करने की दावत दे डाली। और अच्छी-खासी फ़सल बरबाद होने से बच गई। इस बार भी किसान के पास अनाज की कमी नहीं रही। सभी गाँववाले किसान की प्रशंसा करने लगे।

नई फ़सल की तैयारी अभी शुरू हुई ही थी कि कौए ने एक और भविष्यवाणी कर डाली। इस बार फ़सल नष्ट करने के लिए चूहों का आक्रमण होगा। फिर क्या था! कौए की बातों पर विश्वास करके लोगों ने बिल्लियाँ पाल लीं और चूहों को फ़सल नष्ट

करने से रोका। इस तरह सभी की फ़सल नष्ट होने से बच गई। पूरे गाँव में खुशहाली छा गई। इस तरह किसान और कौए की दोस्ती पूरे गाँव में मशहूर हो गई।

2 छात्र स्वयं करें।

शेर की सवारी

3 भारत के पर्वतीय क्षेत्र में एक खूबसूरत गाँव था। गाँव के पीछे जंगल में एक शेर रहता था। वह अकसर गाँव में घुसकर शिकार करने आ जाता था। अत: गाँववाले बहुत सतर्क रहते थे। एक बार शेर को कुछ दिनों तक कुछ भी खाने को नहीं मिला। वह शिकार की तलाश में रात में गाँव के अंदर घूम रहा था। बारिश होने के कारण वह एक मकान के पीछे बारिश से बचने के लिए बैठ गया।

अचानक शेर को बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी। उसकी माँ उसे चुप कराने लगी। उसने कहा, "चुप हो जा वरना लोमड़ी आ जाएगी।", लेकिन बच्चा चुप नहीं हुआ। उसकी माँ ने भालू, चीता, हाथी आदि का नाम लेकर बच्चे को डराया, किंतु बच्चा रोता ही रहा। अंत में माँ ने कहा, "चुप हो जा, खिड़की के नीचे शेर बैठा है।" पर बच्चे पर कोई असर नहीं हुआ। शेर मन ही मन सोचने लगा। इसे कैसे पता कि मैं खिड़की के नीचे बैठा हूँ! यह बच्चा भी कैसा है कि शेर से भी नहीं डरता।

तभी माँ ने कहा, "यह देखो किशमिश।" बच्चे ने फौरन रोना बंद कर दिया। अब तो शेर एकदम डर गया और सोचने लगा कि यह किशमिश अवश्य ही कोई मुझसे भी भयानक एवं बलवान जीव है। उसी समय शेर की पीठ पर कोई भारी चीज़ धम्म से गिरी। शेर जान बचाकर भागा। उसे लगा कि किशमिश आ गया।

असल में शेर की पीठ पर एक चोर कूदा था, जिसने अँधेरे में शेर को गाय समझ लिया और उसे चुराने के लिए उसपर कूद गया।

शेर डर से काँपते हुए सरपट भागा जा रहा था। चोर को भी पता चल गया था कि वह गाय की नहीं बल्कि शेर की पीठ पर सवार है। वह भी भयभीत था। उसने शेर को कसकर पकड़ लिया। वह सोच रहा था कि यदि वह नीचे गिरा, तो शेर उसे ज़िंदा नहीं छोड़ेगा। शेर को अपनी जान की पड़ी थी और चोर को अपनी फ़िक्र थी।

थोड़ी देर में उजाला होने लगा। चोर को एक पेड़ की निचली डाली दिखाई दी। उसने लपककर डाली पकड़ ली और तेज़ी से पेड़ पर चढ़कर छिप गया। चोर ने चैन की साँस ली। उधर शेर को भी अपनी पीठ पर बोझ कम महसूस हुआ तो उसकी भी जान में जान आई। शेर ने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया और कहा, "जान बची तो लाखों पाए। अब उस गाँव में नहीं जाऊँगा। वह किशमिश तो बहुत ही खतरनाक है।"

अभ्यास प्रश्न पत्र

1 (क) यदि भाषा का लिखित रूप विकसित न हुआ होता तो हम लिखकर और पढ़कर विचारों का आदान-प्रदान नहीं कर पाते।

(ख) भाषा वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों के व्यवस्थित रूप से बनती है। वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों की व्यवस्था कैसी होगी अर्थात किस वर्ण, शब्द अथवा वाक्य का प्रयोग कहाँ और कैसे होगा। इसका ज्ञान व्याकरण कराता है। व्याकरण भाषा को शुद्ध रूप से बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाने वाला शास्त्र है।

(ग) संधि में दो वर्णों का मेल होता है जबकि समास में कारक चिह्नों या शब्दों का लोप हो जाता है।

(घ) विशेषण शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताते हैं जबकि प्रविशेषण शब्द विशेषण की विशेषता बताते हैं।

(ङ) संस्कृत, हिंदी, मराठी तथा नेपाली देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं।

2 (क) 1949 (ख) अरबी-फ़ारसी (ग) मूल (घ) 5

3 प् + र् + आ + य् + अ + श् + च् + ई + त् + अ

स् + अं + प् + ऊ + र् + ण् + अ + त् + आ

4

अनु	+ छेद	= अनुच्छेद	व्यंजन संधि
गुरु	+ उपदेश	= गुरूपदेश	दीर्घ संधि
नर	+ इंद्र	= नरेंद्र	गुण संधि
जगत्	+ ईश	= जगदीश	व्यंजन संधि

5 वृक्ष – पेड़, विटप

आकाश – आसमान, नभ

6. अनल; चीर; अवधी; ग्रह

7 अन – अनजान

इत – इच्छित

अप – अपमान

ई – विदेशी

8

देश के लिए प्रेम	तत्पुरुष समास
नीला है जो कंठ	कर्मधारय समास
दस हैं आनन जिसके	बहुव्रीहि समास

9 जलज – योगरूढ़ परोपकार – यौगिक

घर – रूढ़ निशाचर – योगरूढ़

10 ज्येष्ठ – जेठ पत्र – पत्ता

श्रावण – सावन दंत – दाँत

अक्षि – आँख मयूर – मोर

11 खट्टा – खटाई निकृष्ट – निकृष्टता

ऊँचा – ऊँचाई मनुष्य – मनुष्यता

12 (क) विदुषी – विद्वान बुद्धिमान – बुद्धिमती

सम्राज्ञी – सम्राट साँप – साँपिन

(ख) पेड़ से फल गिरा। अपादान कारक

वह आपके लिए फल लाएगा। संप्रदान कारक

13 पुरुषवाचक सर्वनाम में कहने वाला (वक्ता), सुनने वाला (श्रोता) तथा अन्य जिसके विषय में कहा जाता है तीनों का बोध होता है। जैसे– मैं, तू, वह। निजवाचक सर्वनाम में शब्दों से अपनेपन का बोध होता है अर्थात इन्हें निजता पर बल देने के लिए प्रयोग किया जाता है। जैसे– खुद, स्वयं, अपने आप।

14 मेरी – सार्वनामिक विशेषण

रंगीन – गुणवाचक विशेषण

पहला – निश्चित संख्यावाचक विशेषण

सुंदर – गुणवाचक विशेषण

इस – सार्वनामिक विशेषण

15 संयुक्त वाक्य – उसने खाना खाया और सो गया।

मिश्र वाक्य – उसने जैसे ही खाना खाया, वैसे ही सो गया।

16 मैं देख नहीं सकता।

पुलक से फुटबॉल खेली जा रही है।

पक्षियों से उड़ा जाता है।

17 (क) विशेषण, संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग

(ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

18 (क) जिसने ईमानदारी के साथ उसके एवज़ में कोई काम न किया हो अर्थात मेहनत न की हो।

(ख) लेखक ऐसे सभी सदाव्रत बंद करा देते जहाँ मुफ़्त का भोजन कराया जाता है।

(ग) इससे आलस्य, ढोंग, अकर्मण्यता और अपराधवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।

(घ) इससे राष्ट्र की संपत्ति में कोई वृद्धि नहीं होती– न भौतिक और न आध्यात्मिक – बल्कि इससे दानदाता में पुण्यशाली होने की झूठी भावना पैदा होती है।

(ङ) बुद्धि + मत्ता + पूर्ण; अकर्मण्य + ता

19 एवं 20 छात्र स्वयं करें।